"|| ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै ||"

जय अहिबरन

जय बरन तीर्थ

बरन वालों के इतिहास की एक झलक

अतुल कुमार बरनवाल

बरन वालों के इतिहास की एक झलक
अतुल कुमार बरनवाल

महाराजा अहिबरन जन्मोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

साहेबगंज जिला का अत्याधुनिक सर्व सुविधा सम्पन्न प्रथम

सूर्या सुपर स्पेशिएलिटी हॉस्पीटल, साहेबगंज

(NABH ACCREDIATED)

Email : snhsbg@gmail.com

SURYA SUPER SPECIALITY HOSPITAL
सूर्या सुपर स्पेशिएलिटी हॉस्पीटल

आयुष्मान भारत योजना के तहत 6000 मरीजों का सफल ऑपोशन अब तक किया गया।

आयुष्मान भारत के तहत निःशुल्क ऑपरेशन एवं डायलिसिस की सुविधा उपलब्ध है।

OUR DOCTORS

DR. VIJAY KUMAR
MS. DA, FCGP, FAIS, FICS FMAS
CONSULTANT GEN. & LAPAROSCOPIC SURGEON

DR. AMITAVA BISWAS
MS, SR CONSULTANT EYE SURGEON
DIRECTOR SUNETRA FAMILY EYE CARE CENTRE, KOLKATA

DR. SUMIT KUMAR
MS, MCH (UROLOGY)
UROLOGIST & LAPROSCOPIC

Dr. Khushboo Priya
MBBC, (HONS), GOLD MEDALIST
MS (GYANE & OBS)
FELLOW IN INFERTILITY :
CONSULTANT GYNECOGIST
OBSTETRICIAN & INFERTILITY SPECIALIST

Dr. A.K. Singh
MD (RADIOLOGY)
RADIOLOGIST

Dr. Kalyan Saha
D.M. (CARDIOLOGY)
CANSULTANT CARDIOLOGIST

Dr. Anil kumar
M.D. (ANAESTHSIA)
CONSULTANT ANAESTHETIST

Dr. Amresh Kumar
M.S. (ORTHO)
CONSULTANT ORTHOPEDICS

SURYA IVF & FERTILITY CENTRE
Surya Super Speciality Hospital
S.B. Roy Road, Sahibganj (Jharkhand)

निःसंतान
दम्पतियों हेतु आई.बी.एफ. सुविधा उपलब्ध है।

DR. KHUSHBOO PRIYA
MBBS (HONS.), GOLD MEDIALIST
MS (GYNAE & OBS.) FELLOW IN INFERTILITY
CONSULTANT GYNAECOLOGIST, OBSTETRICIAN & INFERTILITY SPECIALIST

DR. SUMIT KUMAR
MS, MCH (UROLOGY)
UROLOGIST, ANDROLOGIST & LAPAROSCOPIC SURGEON

अग्रिम रजिस्ट्रेशन के लिए कॉल करें
7480024325
9264197983
9264197990

विशेषज्ञ परामर्श एवं ईलाज की आवश्यकता किसे है?

सभी जाँच रिपोर्ट सामान्य होने पर भी संतान का नहीं होना	एक बार संतान होने के बाद दोबारा संतानोत्पत्ति में कठिनाई होना।	बच्चेदानी को टी.बी. (TUBEROLOUS) से ग्रसित होना।	गर्भग्रहण होने के बाद किसी कारणवश बार-बार गर्भपात (MISSED ABORTION) होने।
बच्चेदानी में गांठ का होना अथवा मासिक धर्म कम आना	दो-तीन बार कृत्रिम गर्भाधान (I.U.I) कराने पर भी सफलता न मिलता।	अधिक उम्र के कारण संतान प्राप्ति में अथवा मासिक धर्म का न आना	अनियमित माहवारी, अण्डें का न बनना अथवा समय पर न फुटना (ICOD)

पूर्व में आईवीएफ प्रक्रिया में असफल मरीजों हेतु सुनहरा अवसर

सुविधाएं

- सभी प्रकार की सर्जरी
- मातृ एवं प्रसूति रोग चिकित्सा एवं सर्जरी बांझपन
- आईयू.आई
- सीटी स्कैन
- दूरबीन विधि
- (माईक्रोसर्जरी) द्वारा पित्त की थैली
- एपेंडिक्स
- पथरी, गुर्दा
- गोला (ट्यूमर) प्रोस्टेट इत्यादि का ऑपरेशन
- अल्ट्रासाउण्ड
- ई.सी.जी.
- इकोकार्डियोग्राफी
- सीटी स्कैन
- थरमोग्राफी
- क्रायोकॉटरी
- हड्डी एवं नस संबंधी
- अत्याधुनिक विधि द्वारा
- सर्जरी
- बीमारियों की चिकित्सा एवं डिजिटर एक्स-रे
- आई.भी.पी.
- अत्याधुनिक ऑपरेशन थिएटर,
- पैथोलॉजी
- आई.सी.यु.
- डायलिसिस
- कॉल्पोस्कोपी

S.B. ROY ROAD, SAHIBGANJ, JHARKHAND-816109 | MOB.: 7480024325, 9234197983, 9631183869

सूर्या पारामेडिकल इंस्टीट्यूट

J.N. Roay Road, Sahibganj, Jharkhand - 816109Mob.: 9199161543, 7250215314 E-mail: spisbg@gmail.com

झारखण्ड पारामेडिकल कौंसिल से मान्यता प्राप्त

COURSE :	DURATION
DIPLOMA IN MEDICAL LAB TECH.	2 YEARS
DIPLOMA IN RADIOGRAPHER TECH.	2 YEARS
DIPLOMA IN OPERATION THEATER TECH.	2 YEARS
DIPLOMA IN DIALYSIS TECH.	2 YEARS
CERTIFICATION IN DRESSER	1 YEARS

FACILITY

- PLACEMENT
- Lecture Room
- Laboratory
- Library
- Common Room
- Scholarship
- Museum
- Smart Class
- Hostel Facility
- Examination Hall

Practical training at:
Surya Paramedical Institute & Surya Super Speciality Hospital

डॉ. विजय कुमार बरनवाल, कार्यकारिणी सदस्य, श्री भारतवर्षीय बरनवाल वैश्य महासभा

माता चामुण्डा

बरन वालों की कुलदेवी

बरन वालों के इतिहास की एक झलक

- अतुल कुमार बरनवाल

ISO 9001:2015 Certified Hospital

Redg. No. AL-1663

अंश

न्यूरो एण्ड मैटर्निटी सेन्टर

An Excellent Centre for Brain & Spine Surgery

Dr. Brijesh Kumar

डॉ. बृजेश कुमार

ब्रेन एंड स्पाइनल सर्जन

एम. बी. बी. एस., के. जी.एम. सी. (लखनऊ)
एम. एस., एम्. सी. एच. (न्यूरो सर्जरी)
एस. जी. पी. जी. आई. (लखनऊ)

Dr. Nisha

डॉ. निशा

स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ

एम. बी. बी. एस., डी. जी. ओ.
(गोल्ड मेडलिस्ट)

महाराजा अहिबरन जन्मोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

फ़ोन नंबर - 9453632296 नंबर लगाने का समय दो पहर 3 बजे से सांय 5 बजे तक

एस - 2/627, सी. वी. के., सेंट्रल जेल रोड, पानी टंकी के सामने, सिकरौल, शिव पुर, वाराणसी, यू.पी.-221002
फ़ोन नंबर - 0542-406-7541, मो. - 8353944129

स्वागत अभिनन्दन

महाराजा अहिबरन जन्मोत्सव, 2023 (बरन) का आयोजन उत्तर प्रदेश बरनवाल वैश्य सभा के द्वारा सभी बंधुओं के सहयोग से करवाया जा रहा है। हम उत्तर प्रदेश बरनवाल वैश्य सभा के सभी सदस्यों की तरफ से सभी उपस्थित बंधुओं का बरन की पावन धरती पर हार्दिक स्वागत करते हैं और उम्मीद करते हैं कि आपकी यात्रा और यह प्रवास सुखद होगा । आपका सहयोग आगे भी बना रहेगा ऐसी हमें आशा है।

बरनवालों के इतिहास पर ये पुस्तिका अवश्य हमारे बीच अपने इतिहास के प्रति उत्सुकता और जागरूकता फैलाने में अहम् भूमिका निभाएगी, ऐसी हम आशा करते हैं।

श्रीकांत बरनवाल, आज़मगढ़, अध्यक्ष, 9450214017
रविंद्र बरनवाल, आज़मगढ़, महामंत्री, 9415288805
शिवाजी बरनवाल, वाराणसी, कोषाध्यक्ष, 9335415086

उत्तर प्रदेश बरनवाल वैश्य सभा

SANTOSH NAMKIN BHANDAR

SANTOSH NAMKIN BHANDAR
Scan QR

OUR RANGE

NAMKINS & SWEETS
Lalpari Mixture
Besan Gathiya
Salted Chudwa
Nimki
Bhujiya
Spl. Mixture
Gud Jhiliya
Spl. Khaja

PICKLES
Mango
Bamboo
Green Chilli
Jack Fruit
Rasunaad
Suran (Oal)
Garlic
Lemon

BIHARI SATTU
Spl. Chana Sattu
Corn Sattu
Barley Sattu

Aapka Din Ban Jaye Rangeen....
Jab Sath Ho Santosh Namkin.....

TILKUT
Spl. Tilkut
Spl. Gur Tilkut
Chaska Maska
Khova Tilkut
Basmathi Chudwa

10% OFF
on min. order of Rs.599/-
Code : Tilkut10

20% OFF
on min. order of Rs.1199/-
Code : Tilkut20

ALL INDIA PAN DELIVERY

Call : 9553716440 | Please Visit our Online website : https://santoshnamkin.in

बरन वालों के इतिहास की एक झलक

कुलदेवी माता चामुण्डा के श्री चरणों में समर्पित

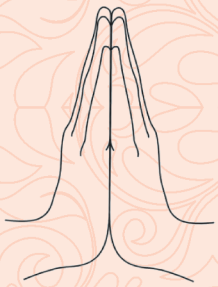

अतुल कुमार बरनवाल

दिल्ली/ग़ाज़ियाबाद/धनबाद

मो.: 8178019961

इ-मेल : atulburnwal@gmail.com

Prop. Murli Kumar Modi 9334422966, 9572852966
Vikashglasshouse@gmail.com

VIKASH GLASS HOUSE

Authorised Dealer:-

Asahi India Glass Ltd.

Saint- Gobain Glass India Ltd.

Alstrong Always Look New

Duratuf- Safety you can trust upon

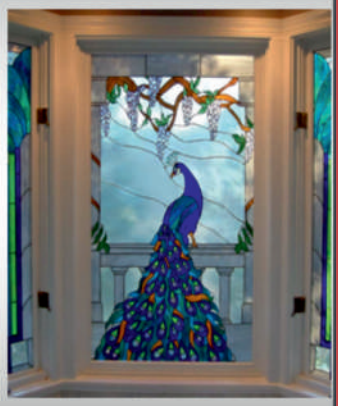

Deals in :

- Toughened Glass, Automobile Glass, Aluminium section
- Etching, Deep Etching, Air Brushing, Acid work
- Aluminium Composite Panel , All Types Glass

ASNABAD, JHUMRI TELAIYA – 825409, JHARKHAND

9931623900, 9386149271

विवेक निवेश केंद्र

Senior Advisor

Star Health Insurance
and Mutual Fund

अपना स्वास्थ बीमा करवाएं आज ही

Whatsapp today to Buy Star Health Insurance

9931623900

अहिबरन पैलेस, दुकान न B 7,
कलाली रोड, नवादा, बिहार,805110

(1994 से आपकी सेवा में।)

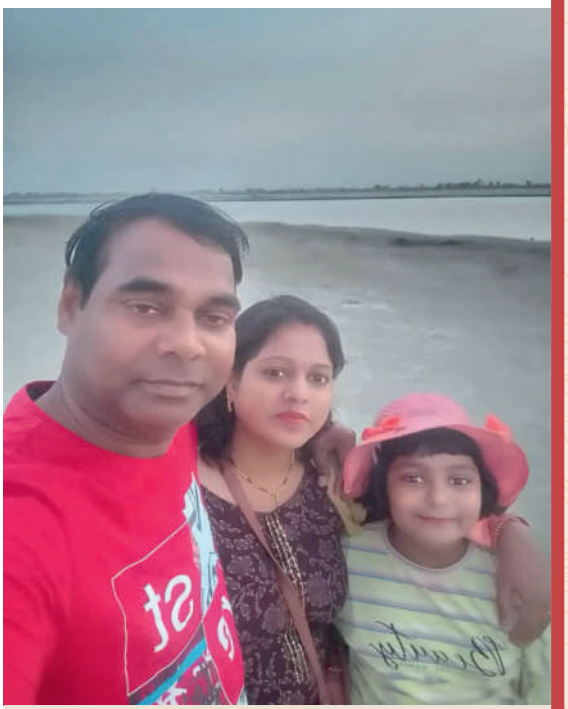

ज्ञान रंजन बरनवाल संग छोटा परिवार
मेल एक्सप्रेस ट्रैन मैनेजर, तिरुपति

बरनवालों के इतिहास की एक झलक

अनुक्रमणिका

1.	प्राक्क्थन	1
2.	मैं चुप हूं। (बलाई कोट के खंडहर)	2
3.	अहिबरन वंदना	3
4.	बरनवाल और सन 1857 का पहला स्वतंत्रता संग्राम	4
5.	बरनवालों का संक्षिप्त इतिहास	5
6.	बरनवालों की राष्ट्रीय एकता	9
7.	बरनवाल समुदाय में समाज सुधार	12, 17
8.	तस्वीरें	13, 14, 32, 34
9.	मेरी वंशावली	15 - 16
10.	बरन यानी बुलंदशहर	19
11.	बरनवाल इतिहास प्रोजेक्ट	21
12.	बरनवालों की पहली वेबसाइट	21
13.	बरन तीर्थ	22
14.	बरनवालों में लक़ब	22
15.	बरनवाल गोत्र	23
16.	बरनवालों की कुलदेवी	24
17.	बरनवालों के पुरोहित	24
18.	हर घर अहिबरन	25
19.	बरन बंधु	25
20.	बरनवाल जयघोष	26
21.	बरनवाल धर्मशालाओं का विवरण	27
22.	बरनवाल चंद्रिका	29
23.	रजत जयंती अधिवेशन	29
24.	श्री भारत वर्षीय बरनवाल वैश्य महासभा, वाराणसी के अधिवेशन	30
25.	प्रमाण पत्र	31
26.	महाराजा अहिबरन की तस्वीर	33
27.	बरनवाल समुदाय की पताका	35
28.	बरनवालों में प्रथम	35

www.maharajaahibaran.com

प्रवेशद्वार पंडाल, रजत-जयन्ती अधिवेशन, बेतिया ।

स्वागत-समिति के सदस्य तथा माला पहने हुए स्वागताध्यक्ष श्रीशिवगुलामप्रसाद गुप्त एवं सभापति श्रीजयदेवप्रसादगुप्त । (पृ० ७०)

रजत जयंती अधिवेशन की तस्वीरें

स्वजातीय स्वयंसेवक समूह ।

श्री भारतवर्षीय बरनवाल वैश्य महासभा (पृ० ६६)
२५ वाँ रजतजयन्ती अधिवेशन, बेतिया, चंपारन सन १९४४ ई० ।

प्राक्कथन

बरनवालों के इतिहास पर बहुत ज्यादा काम नहीं हुआ है। लेकिन जितनी भी विभूतियों ने जो कुछ भी लिखा है, उससे यह तो पता चलता है कि हमारा इतिहास गौरवशाली और लिखने योग्य है।

जन्मोत्सव की तैयारी के समय ये विचार बना की सभी भाग लेने वाले बंधुओं को भी इस गौरवशाली इतिहास का भान करवाया जाए।

दरअसल, इतिहास लेखन अक्सर शासक वर्ग के लोगों का शौक हुआ करता है। दुर्भाग्य से तकरीबन 1000 ईस्वी से ही हम शासन से दूर रहे। व्यापार और दैनिक जद्दो जहद में पड़े हुए बरनवालों के पास अपने इतिहास को लेकर उत्सुकता का जैसे अभाव सा है। जिस कारण से सब कुछ होने के बावजूद हम अभी भी अंधेरे में घूमते रहते हैं और दूसरे की बातों को सत्य मान कर अपनी पहचान ही भुलाए बैठे हैं।

इस कारण जो हमने लिखा है इसे सिर्फ एक झलक कहा है। दरअसल हमारे इतिहास के ज्यादातर पहलू अंधेरे में हैं। जिनपर काम करना जरूरी है।

कई सारी नई बातें भी पता चलीं लेकिन इसका मुख्य आधार पहले से लिखे गए लेख ही हैं। इसे लिखने में बरनवाल दर्शन, श्री जगदीश प्रसाद बरनवाल "कुंद", मास्टर भोलानाथ गुप्ता के कार्यों से अधिक मदद ली गई है। वहीं, बुलंदशहर यानी बरन के अंग्रेज जिलाधीश एफ एस ग्राउज की किताबों से भी काफी जानकारी ली गई है। चूँकि ये एक पुस्तिका है, स्त्रोत का विस्तृत विवरण इसमें नहीं दिया गया है. जन्मोत्सव की स्मारिका में सभी जानकारियों का विवरण उपलब्ध करवाने की चेष्टा की जाएगी.

अपने गौरवशाली इतिहास के बारे में जानकर भी जिन्हें अपनी बरनवाल पहचान पर गर्व नहीं हो सकता उनके लिए कुछ भी कहना सही नहीं है। आशा है यह पुस्तिका आगे चल कर उत्सुकता को अंजाम तक लेकर जाएगी।

सभी बरनवाल बंधुओं खास कर श्री श्रीकांत बरनवाल, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश बरनवाल वैश्य सभा जिन्होंने इस पुस्तिका को लिखने का विचार दिया, का धन्यवाद।

पुस्तिका में महाराजा अहिबरन की एक तस्वीर दी हुई है, जिसे काट कर फ्रेम करवा कर घर, दुकान पर लगाएं ऐसी हम अपेक्षा रखते हैं जिससे हर घर अहिबरन का लक्ष्य पूरा हो सके।

पुस्तिका में **मेरी वंशावली** के नाम से भी दो पृष्ठ हैं। इनमें अपना और अपने पूर्वजों का नाम भर कर आप अपने और अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए एक यादगार दस्तावेज बना सकते हैं। एक वंशावली पिता के परिवार के लिए है और दूसरी माता के परिवार के लिए। नाम के साथ स्थान भी जरूर लिखें।

न्यास निर्देशिका से अहिबरन वंदना और श्री प्रवीण बरनवाल, विंध्याचल की एक कविता बरनवाल जयघोष भी इसमें शामिल की गई है। उनका धन्यवाद।

अतुल कुमार बरनवाल
गाजियाबाद
01.12.2023

मैं चुप हूं। (बलाई कोट के खंडहर)

मैं खंडहर हूं, एक अतीत का
जो सोया है उनिंदी सी आंखों में।
ना कोई प्रेमियों के आलंगन का गवाह
ना कबूतरों के मदमस्त उड़ानों का साक्षी
मैं तो जैसे
किसी पिछले युग से ही चुप हूं।

चुप तो मैं डोर# के समय भी था
और गोरी और गजनवी के समय भी,
डोर गद्दारों@ की गद्दारी पर भी मैं चुप था
चुप था तुगलक की मक्कारी पर भी।

मेरी चुप्पी उस वक्त भी थी
जब मेरे नाम का अस्तित्व भी मिटा दिया गया।
लेकिन क्या परवाह
जब मैं चुप था
मेरे चाहने वालों के सर,
लटके थे जब मेरे ही कंगूरों पर$,
और बच्चों, बूढ़ों, महिलाओं संग
जाने लगे थे मेरे अपने बरन वाले।

मेरी चुप्पी तो मजबूरी है मेरी
क्योंकि मैं हूं
एक निर्जीव, खामोश, खंडहर।
लेकिन वो क्यों चुप हैं जिन्हें बोलना था?
माना, कि तुगलक और औरंगजेब के बीच की सिसकी भी थी खौफनाक
लेकिन उसके बाद की चुप्पी !
जैसे मेरे लोग मेरा पता ही भूल गए
या बन गए मेरी ही तरह, खंडहर!

आज सदियों बाद जैसे किसी ने निहारा है।
सुनने में आया है
ये हैं वही बरन वाले
जो मुझे इन बंजर नजारों के बीच छोड़ गए थे।
जैसे वर्षों से बिछड़ा कोई अपना,
मिलने आया है।
आस है कि फिर से अटखेलियां करते अपने बच्चों को देखूं
और नव ब्याहताओं के शर्मीले पदचापों को देख कर मुस्काऊं।
क्या पता, मेरी बची खुची सी बदरंग दीवारों में
शायद उन्हें भी किसी अपनेपन का एहसास हो ही जाए।
शायद वो फिर लौटें और समझें
कि मेरी चुप्पी स्याह और सफेद है
उनके होने और ना होने से ही।

अतुल कुमार बरनवाल

#हरदत्त डोर ने 997 ईस्वी में अंतिम बरनवाल राजा रुद्रपाल से बरन की सत्ता हथिया ली थी।
@ द्वारपाल अजयपाल डोर और हीरासिंह ने ऐबक के हमले के समय गद्दारी करते हुए किले के दरवाजे खोल दिए थे और कुतुबुद्दीन ऐबक ने राजा चंद्रसेन डोर की हत्या करके शहर की बागडोर गोरी के दोस्त काजी नूरुद्दीन गजनीवाल को सौंप दी थी.

$ 14वीं शताब्दी में मुहम्मद तुगलक ने बरन पर आक्रमण करके इस्लाम स्वीकारने के लिए भारी अत्याचार किए थे और प्रतिष्ठित लोगों के सर किले के कंगूरों से लटका दिए थे, जिसके बाद बरन वालों के पैर अपनी भूमि से उखड़ गए थे.

अहिबरन वंदना

चलो आरती का दिया तो जलाएं।
करें आरती युग पुरुष अहिबरन की ।।

जलाई थी जिसने जीवन की ज्योति ।
प्रकाशित उसी से बरनवाल जाति ।।
युगों से जिसे हम भुलाए हुए थे।
करें वंदना युग पुरुष अहिबरन की ।।

जन्म भर ना बैठा कभी चैन से जो ।
लगा ही रहा जाति के उन्नयन को ।।
करें आज अर्पित श्रद्धा सुमन तो।
उसी अहिबरन को, उसी अहिबरन को ।।
चलो आरती का दिया तो जलाएं।।

करें आज हम सब शत शत प्रतिज्ञा।
चलेंगे उसी की बताई डगर पे।।
जलाएंगे ज्योति मधुर प्रेम की यों।
घरों में अंधेरा कहीं रह ना जाए।।
चलो आरती का दिया तो जलाएं।।

पताका विजय की फहर कर रहेगी।
अगर संगठन हम बनाए रहेंगे।
सुरभि स्नेह की गर प्रवाहित रही तो।
बरन जाति के पुष्प खिलते रहेंगे।।
चलो आरती का दिया तो जलाएं ।।

अरे तुम हृदय को तनिक झांक देखो।
कटीली चुभन है हर एक मन में।
करो यत्न ऐसा हर एक मन में।
ठहरने ना पाए अंधेरा दिलों में ।।
चलो आरती का दिया तो जलाएं।।

(1992 में प्रकाशित न्यास निर्देशिका से उद्धृत)

बरनवाल और सन 1857 का पहला स्वतंत्रता संग्राम

कहा जाता है कि अंग्रेजों ने 1857 के पहले स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित ज्यादातर दस्तावेज नष्ट कर दिए थे। वीर सावरकर के अपनी पुस्तक "भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम" लिखे जाने तक देश में लोगों की स्मृति में ये एक छोटे मोटे विद्रोह के रूप में ही जाना जाता था। अभी भी कई संदर्भों में इसे गदर, विद्रोह इत्यादि ही लिखा जाता है।

पहले स्वतंत्रता संग्राम में बरनवालों की क्या भूमिका थी? क्या बरनवाल बिल्कुल अछूते थे? 1900 ईस्वी के बाद तो कई महान बरनवाल स्वतंत्रता सेनानी विभूतियों के बारे में हमें पढ़ने को मिलता है, लेकिन उसके पहले क्या?

2. शहर बरन (बुलंदशहर) के मूलनिवासी श्री मेजर अमित बंसल (बरनवाल) जो भारतीय सेना से सेवानिवृत्त हैं और वर्तमान में Zee ग्रुप में कार्यरत हैं, अपने पूर्वजों की खोज की यात्रा पर निकले, और अबतक 18 पीढ़ियों तक की खोज कर चुके हैं। इस खोज के दौरान रामपुर, लखनऊ इत्यादि के पुस्तकालयों व् सरकारी अभिलेखागारों से सघन खोज कर उन्होंने वकील बाबू रामनारायण, नौरोली का संदर्भ पाया जो उनके पूर्वज थे। वकील बाबू रामनारायण ने सन 1857 के पहले स्वतंत्रता संग्राम में 1000 सैनिकों के साथ अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। बिसौली के किले में स्वयं पेशवा नाना साहेब ने इन्हें खान बहादुर / कर्नल की उपाधि दी थी। इन्होनें पहली दो लड़ाईयों में अंग्रेज़ों को कड़ी शिकस्त दी परन्तु इस्लामनगर की तीसरी लड़ाई में सात जून सन 1858 को अंग्रेजों से लोहा लेते समय ये वीरगति को प्राप्त हुए।

3. शहीद वकील बाबू रामनारायण बरनवालों की गौरवशाली परंपरा के आदर्श हैं। राष्ट्र प्रेम और असीम साहस हमारी पहचान है, शहीद वकील बाबू रामनारायण का उदाहरण यह सिद्ध करता है। इसी गौरवशाली परंपरा को हमें ढूंढना है और विस्मृत होने से बचाना है।

4. शहीद वकील बाबू रामनारायण को पूरे बरन वाल समुदाय की तरफ से मैं श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं।

5. ऐसी विभूतियां और भी हैं, हमें सिर्फ उन्हें ढूंढना है। जन्मोत्सव सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं है, ये अपने इतिहास को ढूंढने की एक यात्रा है, अपनी गौरवशाली परंपरा को पहचानने और दुनिया को उसका दर्शन करवाने का एक यज्ञ है।

अतुल कुमार बरनवाल

बरनवालों का संक्षिप्त इतिहास

बरन वालों का इतिहास प्रमाणिक रूप से महाराजा अहिबरन और शहर बरन से संबंधित है। ऐतिहासिक ग्रंथों के आधार पर यह तो तय है कि समस्त बरन वाल शहर बरन से निकले हैं। यह भी स्थापित तथ्य है कि शहर बरन की स्थापना महाराजा अहिबरन ने की थी। लेकिन इसके आगे बढ़ना इतना आसान नहीं होता है। कारण ये है कि महासभा के गठन के बाद शुरू के कुछ दशकों को छोड़ दें तो कोई भी शोध कार्य इस विषय पर नहीं किया गया है। जाति रत्न त्रिवेणी प्रसाद बरनवाल, श्री जगदीश बरनवाल "कुंद", स्व० श्री कृष्णचन्द्र बरनवाल, स्व० भोलानाथ गुप्ता बरनवाल इत्यादि ने इस विषय पर काफी कुछ लिखा है लेकिन उन्होंने भी इस विषय में और अधिक शोध की आवश्यकता बतलाई है।

2. इतिहास की संक्षिप्त जानकारी की दृष्टि से मैं बरन वालों के इतिहास को तीन हिस्सों में बांटता हूं।

- **बरन वालों का प्राचीन इतिहास (997 ईस्वी तक):** जिसके बारे में फिलहाल बहुत ज्यादा तथ्य मौजूद नहीं हैं।

- **मध्यकालीन इतिहास (997 ईस्वी से लेकर 1881 ईस्वी तक):** यह एक अंधकार युग है, जिसमें बरन वालों की सबसे ज्यादा क्षति भी हुई और बरन वालों की अलग पहचान भी स्थापित हुई। लेकिन इसके विषय में भी दो चार घटनाओं को छोड़ कर ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है।

- **1881 ईस्वी से लेकर अभी तक का आधुनिक इतिहासः** इसे भी समझने की दृष्टि से दो तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है।

3. **प्राचीन इतिहास:** शहर बरन (बुलंद शहर) के जिलाधीश रहे श्री F S ग्राउज ने महाराजा अहिबरन के होने पर भी संशय किया है। लेकिन महाराजा अहिबरन का अस्तित्व इतिहास के उद्धरणों में भरा हुआ है। बुलंद शहर जिला कार्यालय द्वारा नुमाइश हॉल में लगाई गई शिला पट में इस बात का जिक्र है कि शहर बरन की स्थापना (महा) राजा अहिबरन ने की थी। महाराजा अहिबरन के विषय में भी कई मान्यताएं और परंपराएं प्रचलित हैं। हम उनके बारे में एक एक करके चर्चा करते हैं।

3.1 पं० ज्वाला प्रसाद शास्त्री कृत "जाति भास्कर" के अनुसार समाधि के दो पुत्रों गुणाधीश और मोहन में से गुणाधीश के दो पुत्र हुए धर्मदत्त और शुभंकर। शुभंकर ने अपनी जाति से अलग होकर पेरी नगरी में अपना निवास किया। पीछे ये कांचनपुर में आकर शंखनिधि वैश्य का मंत्री हुआ। शंखनिधी की पुत्री चंद्रावती से इसका विवाह हुआ जिसे लेकर ये कावेरी नदी को पार कर के अपने स्थान पर आया जहां शिव के आशीर्वाद से इसे तेंदूमल नामक पुत्र हुआ जिसका पुत्र वाराक्ष और जिसके वंश में बरनवाल नामका बड़ा बुद्धिमान पुत्र हुआ। इस वंश में पुरुषों द्वारा 36 कुल प्रतिष्ठित हुए। शास्त्री जी की ही दूसरी परम्परा के अनुसार द्वाराक्ष नामक राजा की राजधानी बरन थी। यहां जो उसकी संतानें हुईं सो बरनवाल कहलाईं।

3.2 राजा लक्ष्मण सिंह अपने लेख में लिखते हैं कि महाभारत युद्ध के दो, तीन पीढ़ियों के बाद अहार के सरदार का सादर मुकाम अहार से उठ कर बनछती जिसे जंगल काट कर बनाया गया था में स्थापित हुआ। फिर कुछ समय पश्चात परमाल तंवर (तोमर) ने उसी स्थान पर एक नया कस्बा बसाया। बाद में राजा अहिबरन ने इसे बढ़ा कर शहर के समान किया जो बरन के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

3.3 सूचना विभाग उ प्र से प्रकाशित पुस्तिका "प्रगति के बढ़ते चरण: बुलंदशहर" में भी इस बात का उल्लेख है कि इस शहर का इतिहास ग्राम आहार से प्रारंभ होता है जो हस्तिनापुर के उजड़ने के पश्चात पांडवों की राजधानी रहा था। आहार का अर्थ शायद सांपों के मारे जाने से था। संभवतः यहीं जन्मेजय ने नागवंश को खत्म करने के लिए नाग यज्ञ किया था। जन्मेजय ने वन छटी को साफ कर के नगरी बसाई। राजा परमाल ने यहां एक किला बनवाया और फिर राजा अहिबरन ने यहां बरन नामका नगर बसाया।

3.4 1871 ईस्वी में प्रकाशित भारतेंदु हरिश्चंद्र की पुस्तक "अग्रवालों की उत्पत्ति में" अग्रवालों की वंश परंपरा के लिए मुख्य आधार श्री महालक्ष्मी व्रत कथा को बनाया गया था। इसकी एक परंपरा में समाधी के दो पुत्रों में प्रथम पुत्र गुणाधीश से बरन और द्वितीय पुत्र मोहन से अग्रसेन की उत्पत्ति दिखाई गई है। श्री महालक्ष्मी व्रत कथा के बारे में श्री सत्यकेतु विद्यालंकार का कहना था कि इसे हस्तलिखित रूप में भारतेंदु जी के पुस्तकालय में पाकर उन्होंने ही प्रकाशित करवाया था। डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त का कहना है कि भविष्य पुराण के किसी भी अंक में इस कथा का उल्लेख नहीं है। महालक्ष्मी व्रत कथा की प्रमाणिकता को भी श्री गुप्त अस्वीकार करते हैं।। श्री कृष्णचंद्र बरनवाल और श्री मक्खनलाल बरनवाल ने महाराजा अग्रसेन से बरनवाल परंपरा का प्रादुर्भाव दिखाया है लेकिन वंशावली के संबंध में कोई भी स्त्रोत के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है। दूसरी बात कि इन सज्जनों द्वारा प्रस्तुत वंशावली और श्री महालक्ष्मी व्रत कथा में दी गई वंशावली में कोई मेल नहीं है।

3.5 बुलंदशहर गजेटियर में यह संभावना व्यक्त की गई है कि संभवतः आहार और बरन दोनो नगरों में शासन करने के कारण संबंधित शासक ने अहिबरन की उपाधि धारण की थी।

3.6. कुल मिलाकर यह तो तय है कि महाराजा अहिबरन शहर बरन के संस्थापक और बरन वालों के आदिपुरुष थे, लेकिन उनके पूर्व के बारे में मतांतर है। राहुल सांकृत्यायन ने बरनवालों को यौधेय गण की संतान बताया है। यौधेय गण आज के पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली इत्यादि इलाकों में फैला एक शक्तिशाली गण था जिसकी चर्चा इतिहास की किताबों में मिलती है। इतिहास यह प्रमाणिक रूप से बताता है कि इस इलाके में तकरीबन 4थी शताब्दी तक यौधेयों का शासन था। इसलिए राहुल सांकृत्यायन का यह कहना कि बरनवाल यौधेयों की संतान हैं, गलत नहीं है। डॉ० रामवृक्ष सिंह के अनुसार यौधेय युद्ध प्रिय गण जाति थी. पाणिनि ने यौधेयों के लिए आयुधजीवी संघ का प्रयोग किया है, जिनके लिए वीरता परम धर्म था. यौधेयों का साम्राज्य एक समय में आधुनिक भरतपुर तक फैला हुआ था. इसलिए यह कहना अनुचित नहीं होगा कि बरन वाल जो यौधेयों के संतान कहे जाते हैं, का इतिहास वीरता पूर्ण रहा है. इसे जब हम बरन वालों की कुलदेवी माता चामुंडा के परिपेक्ष्य में देखते हैं तो बात ज्यादा साफ़ होती है. एक आयुधजीवी जाति की कुलदेवी माता चामुंडा ही हो सकती हैं.

4. मध्यकालीन इतिहास: महाराजा अहिबरन के वंशज बरन में एक के बाद एक राज करते रहे और 997 ईस्वी में बरन के राजा रुद्रपाल के समय तक यह शासन अनवरत चलता रहा, जब अलीगढ़ के राजा हरदत्त डोर ने दिल्ली के राजा की सह से बरन पर आक्रमण कर दिया और रुद्रपाल की हत्या कर के खुद गद्दी पर बैठ गया। अलीगढ़ छोड़ कर बरन को अपना प्रधान स्थल बना लेने की घटना से भी यह अंदाज लगाया जा सकता है कि बरन एक समृद्ध राज्य हुआ करता था। लेकिन फिर महमूद गजनवी के आक्रमण शुरू हुए। अल बरूनी के लेखन से हमें पता चलता है कि महमूद गजनवी के 12वें हमले में बरन पर हमला किया गया था। राजा हरदत्त डोर ने अपने दस हजार लोगों के साथ किले से बाहर निकल कर इस्लाम अपना कर अपनी और बरन की भी रक्षा की थी। कुछ सन्दर्भों के अनुसार महमुद गजनवी ने हरदत्त डोर की हत्या कर दी थी और बरन में भारी लूट पाट की थी. 1191 ईस्वी में पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गोरी से बरन की रक्षा की थी. लेकिन 1192 ईस्वी में पृथ्वीराज चौहान की पराजय के बाद मुहम्मद गोरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने बरन पर हमला किया और बरन के राजा चन्द्रसेन डोर की हत्या कर दी तथा शहर की बागडोर गोरी के मित्र काजी

नूरुद्दीन ग़जनीवाल को सौंप दी. लेकिन बरन वालों पर असली परीक्षा की घड़ी आई जब मुहम्मद तुगलक ने 14वीं शताब्दी में इसपर हमला किया। इस समय बरन वालों पर इस्लाम अपनाने, वरना मरने या फिर शहर छोड़ देने के अलावा कोई चारा नहीं बच गया था। संघर्ष में बरन वालों के 100 प्रधान पुरुषों के सर काट कर किले से लटका दिए गए थे। इससे आतंकित होकर बरनवालों ने अपनी जन्मभूमि का त्याग करने का निर्णय कर लिया। कई बरन वाले मुस्लिम भी बन गए जिन्हें आजकल बरनी मुस्लिम के नाम से जाना जाता है और बरन में उन्हें आप बहुतायत में पाएंगे। विद्वानों का मत है कि शहर में हुए अत्याचार से ये लोग इतने आतंकित थे कि उन्होंने गांवों को ज्यादा सुरक्षित समझा और इसलिए गांवों को अपना ठिकाना बनाया। शायद काली (कालिंदी) नदी जिसे पहले वरणावती नदी के नाम से जानते थे, के रास्ते ये लोग शहर छोड़ कर निकले थे और इस कारण काली नदी और फिर गंगा के किनारे बसते गए। इसके बाद सन 1881 ईस्वी तक के बारे में हमें कोई विशेष जानकारी नहीं है। 16वीं शताब्दी के अंतिम समय में बादशाह अकबर ने परगना बरन की कानूनगोई बरनवालों को दी थी और लाला संतोषराय इस वंश के प्रथम कानूनगोय हुए थे. 250 सालों तक यह पद इसी वंश के पास रहा. औरंगजेब के समय में इसी वंश के काले राय मुसलमान होकर अजमत उल्ला हुए जिन्हें इनाम के तौर पर नवाब की पदवी और 84 गांव की जागीर दी गयी. इनकी हिन्दू संतानें फतहचन्द और गोपीनाथ और पोते हकीकत राय हिन्दू ही रहे और लज्जित होकर कहीं चले गए. काले राय की मुसलमान संतान मुहम्मद हयात और मुहम्मद रोशन के वंश की भारी वृद्धि हुई. 1876 में बरनवाल मुसलमान मु० शहाबुद्दीन, नवाब, माशूक अली खान और बाद में नवाब आशिक हुसैन खान आनरेरी मजिस्ट्रेट, शेख अंसारी इत्यादि का जिक्र मिलता है. 1798 में शहर बरन से मालागढ़ तक एक मरहटा सरदार माधवराव फालकिया का अधिकार हुआ. किन्तु 1804 में कर्नल जेम्स स्किनर ने उसे हरा कर उसके 28 गांव जब्त करके उससे किला बरन और मालागढ़ खाली करवा लिए और कुछ वजीफा देकर उसके लड़के रामाराव फालकिया को उसके 600 सवार साथियों के साथ कंपनी की सेना में शामिल कर लिया था. कहा जाता है कि अनूप शहर की स्थापना करने वाले राजा अनूप राय जिन्होंने जहांगीर को शेर से बचाया था महाराजा अहिबरन के वंशज ही थे. बरनवाल शीतल दास ने 1830 ईस्वी में शहर बरन का एक मोहल्ला शीतलगंज बसाया था. बरनवाल वकील बाबू रामनारायण ने सन 1857 के पहले स्वतंत्रता संग्राम में 1000 सैनिकों के साथ अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। बिसौली के किले में स्वयं पेशवा नाना साहेब ने इन्हें खान बहादुर/ कर्नल की उपाधि दी थी। इन्होनें पहली दो लड़ाईयों में अंग्रेज़ों को कड़ी शिकस्त दी परन्तु इस्लामनगर की तीसरी लड़ाई में सात जून सन 1858 को अंग्रेजों से लोहा लेते समय ये वीरगति को प्राप्त हुए।

5. आधुनिक इतिहासः 14वीं शताब्दी में जब मुहम्मद तुगलक के आतंक और जबरन धर्म परिवर्तन के कारण बरन वालों को अपना नगर त्यागना पड़ा तो वो पूर्व की तरफ कूच कर गए। चूंकि मुसलमान आक्रमणकारियों का मुख्य आक्रमण शहरों पर होता था इसलिए उन्होंने गांवों को आसरा बनाना ज्यादा मुफीद समझा। धीरे धीरे एक जगह से दूसरे जगह बरनवाल फैलते गए। उस समय यातायात और डाक के साधन आज की भांति नहीं थे। इसलिए उनमें आपस में संबंध भी धीरे धीरे टूटते गए। कालांतर में नाम में भी फर्क पड़ने लगा। बरनवाल, बनवार, बंदरवाल, बंदरवार, बरैया, बरवार, वर्णवाल, बर्नवाल, मोदी, गर्ग, गोयल, बंसल, पांडे, सिंह, सिन्हा इत्यादि नाम प्रचलन में आ गए। कहने का मतलब है की विभिन्न स्थानों के बरन वालों में नाम और संपर्क दोनो में अंतर आ गया। फिर ब्रिटिश शासन का आविर्भाव हुआ और सड़क, रेल इत्यादि के साधन सामने आए, डाक की व्यवस्था बनी। अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को असभ्य करार दिए जाने के कारण भारतीय राष्ट्रीयता के प्रति नया आक आकर्षण पैदा हुआ और भारतीय विभूतियों ने देश के स्वर्णिम इतिहास की तरफ सबका ध्यानाकर्षण किया। साथ ही अंग्रेजों की जाति आधारित व्यवस्था जिसमें हरेक भारतीय को

उसकीजाति के साथ पहचान दी गई, जाति के तरफ नया आकर्षण पैदा हुआ। यहां यह बताना जरूरी है कि जातिव्यवस्था भारतीय समाज में पहले से ही थी, लेकिन जैसा समाजशास्त्रियों का विचार है, ये कोई सॉलिड स्ट्रक्चर नहीं था और अक्सर छोटी जातियों को ऊंची जातियों में शामिल किया जाना संभव था। लेकिन जब अंग्रेज भारतीयों पर राज करने के लिए यहां के स्ट्रक्चर को समझना चाहते थे तो उन्होंने प्राकृतिक रूप से ब्राह्मणों और ब्राह्मण टेक्स्ट को आधार बनाया। इस तरह से भारतीय समुदाय को बिल्कुल सॉलिड, कंक्रीट जातियों में विभक्त कर दिया गया। हरेक जाति को जब पता चला कि उन्हें कागजों में ऊंचा और नीचा लिखा जाना है, सभी जातियां अपने आप को ऊंचे से ऊंचा दिखाना चाहती थीं (मैला आंचल में इसकी बानगी आप पाएंगे)। इन कारणों से जातियों ने अपने आपको ज्यादा संगठित करना शुरू किया। यह आश्चर्य नहीं कि ज्यादातर जातीय महासभाएं इसी दौरान बनी थीं।

5.2 इस स्थिति में पश्चिम उत्तर प्रदेश के बरन वालों ने सबसे पहले 1881 में मुरादाबाद के जरगांव में एक बैठक की और एक समिति गठित की। मुंशी तोताराम जी, मुरादाबाद ने बरनवाल उपकारक नाम की एक उर्दू पत्र का भी प्रकाशन किया। 1895 में सहारनपुर में चतुर्थ बरनवाल वैश्य सम्मेलन हुआ। लाला लक्ष्मण प्रसाद, जरगांव, लाला विष्णु दयाल और लाला भगवती प्रसाद, बरन, मुंशी दुर्गा प्रसाद, मुरादाबाद ने पूर्व और पश्चिम के बरन वालों से पत्र व्यवहार करना शुरू किया और 1905 में वाराणसी में 26 और 27 दिसंबर को बाबू बासुदेव प्रसाद और बाबू गंगा प्रसाद रईस, रसड़ा, बलिया की कोठी में गौरीशंकर लालजी रईस, रसड़ा की अध्यक्षता में 120 बरन वालों की बैठक हुई। इस बैठक में बदायूं, दलसिंह सराय, हाजीपुर, मुंगेर, रसड़ा, जफराबाद, सहसराव, आजमगढ़, मऊ, बनारस, बरन, संभल, सरायतरीन, मुरादाबाद से बरन वाल शामिल हुए थे। प्रथम बैठक में ही एक नाम बरनवाल नाम प्रयोग में लाने की बात की गई थी। श्री भारतवर्षीय बरनवाल वैश्य सभा का जन्म भी इसी बैठक में हुआ था।

5.3 महासभा के गठन के बाद बरन वालों को एक करने पर, समाज सुधार इत्यादि पर काफी कार्य हुए. इन सब की जानकारी आपको मेरे दूसरे लेखों "बरनवाल समुदाय में समाज सुधार" और "बरनवालों की राष्ट्रीय एकता" में मिलेगी.

6. अभी तक उपलब्ध जानकारियों से यह तो तय है कि बरनवालों का अतीत और वर्तमान दोनो गौरवशाली हैं। एक बात जो हमें दूसरे वैश्य समुदायों से ऊंचे पायदान पर बिठाती है वो है हमारे पास एक सशक्त डॉक्यूमेंटेड इतिहास का होना। अन्य किसी भी वैश्य समुदाय के पास अपने पूर्वजों के किले के अवशेष नहीं हैं। किवदंतियों से आगे बढ़ कर हमारे पास एक प्रमाणिक इतिहास मौजूद है जिस पर हर बरन वाल गर्व कर सकता है। लेकिन फिर भी इतिहास के बहुत सारे पहलू हैं जिन पर अभी भी अंधकार की छाया पड़ी हुई है। जैसे, महाराजा अहिबरन के काल का निर्धारण, उनके बाद और उनके पहले की कड़ियां। बरन से पलायन के बाद बरनवालों की कथाएं। कहने का तात्पर्य ये है कि इतना सबकुछ होने के बाद भी अभी ऐसा बहुत कुछ है जिस पर शोध किया जाना बाकी है। इसी कारण से बरनवाल इतिहास प्रोजेक्ट की शुरुआत की गई है, जिसमें बरन वालों के इतिहास का प्रमाणिक संदर्भों के साथ संकलन किया जाना है। आशा है यह प्रोजेक्ट हमारे गौरवशाली इतिहास के और बहुत सारे पहलुओं को उजागर करने में सफल होगा।

अतुल कुमार बरनवाल

बरनवालों की राष्ट्रीय एकता

आज जब हम राष्ट्रीय समारोह / सम्मेलन की बात करते हैं, बिहार, झारखंड, बंगाल, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और देश के दूसरे प्रांतों से सभी बरनवालों को एक पताका, एक समारोह में आने की बात करते हैं तो हमें इसके इतिहास में जाना भी जरूरी है।

14वीं शताब्दी में जब मुहम्मद तुगलक के आतंक और जबरन धर्म परिवर्तन के कारण बरन वालों को अपना नगर त्यागना पड़ा तो वो पूर्व की तरफ कूच कर गए। चूंकि मुसलमान आक्रमणकारियों का मुख्य आक्रमण शहरों पर होता था इसलिए उन्होंने गांवों को आसरा बनाना ज्यादा मुफीद समझा। धीरे धीरे एक जगह से दूसरी जगह बरनवाल फैलते गए। उस समय यातायात और डाक के साधन आज की भांति नहीं थे। इसलिए उनमें आपस में संबंध भी धीरे धीरे टूटते गए। कालांतर में नाम में भी फर्क पड़ने लगा। बरनवाल, बनवार, बंदरवाल, बंदरवार, बरैया, बरवार, वर्णवाल, बर्नवाल, मोदी, गर्ग, गोयल, बंसल, पांडे, सिंह, सिन्हा इत्यादि नाम प्रचलन में आ गए। कहने का मतलब है की विभिन्न स्थानों के बरन वालों में नाम और संपर्क दोनो में अंतर आ गया।

फिर ब्रिटिश शासन का आविर्भाव हुआ और सड़क, रेल इत्यादि के साधन सामने आए, डाक की व्यवस्था बनी। अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को असभ्य करार दिए जाने के कारण भारतीय राष्ट्रीयता के प्रति नया आकर्षण पैदा हुआ और भारतीय विभूतियों ने देश के स्वर्णिम इतिहास की तरफ सबका ध्यानाकर्षण किया। साथ ही अंग्रेजों की जाति आधारित व्यवस्था जिसमें हरेक भारतीय को उसके जाति के साथ पहचान दी गई, के कारण जाति के तरफ नया आकर्षण पैदा हुआ। यहां यह बताना जरूरी है कि जाति व्यवस्था भारतीय समाज में पहले थी, लेकिन जैसा समाजशास्त्रियों का विचार है, ये कोई सॉलिड स्ट्रक्चर नहीं था और अक्सर छोटी जातियों को ऊंची जातियों में शामिल किया जाना संभव था। लेकिन जब अंग्रेज भारतीयों पर राज करने के लिए यहां के स्ट्रक्चर को समझना चाहते थे तो उन्होंने प्राकृतिक रूप से ब्राह्मणों और ब्राह्मण टेक्स्ट को आधार बनाया। इस तरह से भारतीय समुदाय को बिल्कुल सॉलिड, कंक्रीट जातियों में विभक्त कर दिया गया। हरेक जाति को जब पता चला कि उन्हें कागजों में ऊंचा और नीचा लिखा जाना है, सभी जातियां अपने आप को ऊंचे से ऊंचा दिखाना चाहती थीं (मैला आंचल में इसकी बानगी आप पाएंगे)। इन कारणों से जातियों ने अपने आपको ज्यादा संगठित करना शुरू किया। यह आश्चर्य नहीं कि ज्यादातर जातिय महासभाएं इसी दौरान बनी थीं। जैसे यादव महासभा का शताब्दी समारोह अभी मनाया जा रहा है।

इस स्थिति में पश्चिम उत्तर प्रदेश के बरन वालों ने सबसे पहले 1881 में मुरादाबाद के जरगांव में एक बैठक की और एक समिति गठित की। मुंशी तोताराम जी, मुरादाबाद ने बरनवाल उपकारक नाम की एक उर्दू पत्र का भी प्रकाशन किया। 1895 में सहारनपुर में चतुर्थ बरनवाल वैश्य सम्मेलन हुआ। लाला लक्ष्मण प्रसाद, जरगांव, लाला विष्णु दयाल और लाला भगवती प्रसाद, बरन, मुंशी दुर्गा प्रसाद, मुरादाबाद ने पूर्व और पश्चिम के बरन वालों से पत्र व्यवहार करना शुरू किया और 1905 में वाराणसी में 26 और 27 दिसंबर को बाबू बासुदेव प्रसाद और बाबू गंगा प्रसाद रईस, रसड़ा, बलिया की कोठी में गौरीशंकर लालजी रईस, रसड़ा की अध्यक्षता में 120 बरन वालों की बैठक हुई। इस बैठक में बदायूं, दलसिंह सराय, हाजीपुर, मुंगेर, रसड़ा, जफराबाद, सहसराव, आजमगढ़, मऊ, बनारस, बरन, संभल, सरायतरीन, मुरादाबाद से बरन वाल शामिल हुए थे। प्रथम बैठक में ही एक नाम बरनवाल नाम प्रयोग में लाने की बात की गई थी। अखिल भारतवर्षीय बरनवाल वैश्य सभा का जन्म भी इसी बैठक में हुआ था।

इसके बाद देश के विभिन्न हिस्सों के बरनवालों को ढूंढने और उन्हें शामिल करने का कार्य शुरू हुआ। इस समय बरनवाल बनना भी मुश्किल कार्य था। महासभा कमीशन नियुक्त करती थी और ये कमीशन जगह जगह जा कर उनके खान पान, आचार विचार, कुल/लकब/अल्ले इत्यादि के बारे में जांच करती थी और फिर अगर सही पाया जाए तभी उनके बरनवाल होने को प्रमाणित करती थी। अक्सर विभिन्न लोगों में किसी एक जगह के बरनवालों को शामिल किए जाने को लेकर विवाद होता रहता था। जैसे दलसिंह सराय के बरनवालों से संबंध को लेकर भारी विवाद था और तलवार और बंदूकें भी तान ली गई थीं। उस समय एक कांसेप्ट था 16 आना, 15 आना, 14 आना। इसका मतलब रक्त की शुद्धता से था। 16 आना बरनवाल असल बरनवाल थे। कई बार महासभा किसी को 15 आना, किसी को 14 आना घोषित कर देती थी। इन विभिन्न जगहों के बरनवालों में आपस में रोटी बेटी का संबंध भी नहीं होता था। इसके लिए भी काफी कोशिश करनी पड़ी थी। शायद 1925 में पूर्व और पश्चिम के बरन वालों में वैवाहिक संबंध शुरू हुए थे। दलसिंह सराय के बरनवालों से रोटी बेटी का संबंध बनाना मुंगेर के बरन वालों को स्वीकार नहीं था। और इसके लिए काफी जद्दो जहद हुई थी। 1920 में पहली बार मुंगेर और दलसिंह सराय के बीच में वैवाहिक संबंध हुए थे। इसी समय तलवारें और बंदूकें तनी थीं। महनार के लोगों को मिलाने के खिलाफ गया वाले थे और 1920 में महनार के बरनवालों को नहीं मिलाया गया था। 1923 में महनार ग्रुप की जांच के लिए जांच कमीशन नियुक्त किया गया था। मालदह ग्रुप, बृजमन गंज के लिए भी इसी समय जांच कमीशन नियुक्त किया गया था। 1925 में मालदह ग्रुप के द्वारा प्रस्तुत प्रमाण बरनवाल चंद्रिका में प्रकाशित किया गया और तीन महीने में कोई ऑब्जेक्शन नहीं आने पर ही उनको शामिल करने की बात की गई थी। इसी वर्ष महनार और बृजमनगंज को शामिल करना स्वीकार किया गया। महनार ग्रुप को शामिल करने की घोषणा करने पर गया के लोगों ने महासभा छोड़ने की बात की और इस कारण से उन्हें जाति बहिष्कृत कर दिया गया था। और महनार ग्रुप को मिलाने के विरोध में गया, दलसिंह सराय के लोग महासभा से अलग हो गए। यह आश्चर्य है की पहले मुंगेर वाले दलसिंह सराय से संबंध के विरोध में थे, बाद में दलसिंह सराय वाले महनार को मिलाने के विरोध में थे। 1925 में बेतिया ग्रुप की जांच के लिए कमिशन नियुक्त किया गया था।

1927 में बस्ती, जमालपुर, और मालदह के लोग मिलाए गए थे। गोरखपुर के शिवहर्षप्रसाद जी ने जब कहा की वो किसी 15 आना बरनवाल की बारात में शामिल हुए थे तो इससे सभा में खलबली मच गई थी और उन्हें लिखित प्रतिज्ञापत्र और क्षमा याचना मांगनी पड़ गई थी। आजमगढ़ के 14 वर्षीय बालक श्रीरामकुमार को 15 आना बरनवाल के यहां शरण पाने के कारण जाति च्युत कर दिया गया था, उसे 1927 में वापस जाति में मिला लिया गया था। 1928 में चेरकी ग्रुप की जांच के लिए कमीशन नियुक्त हुआ था। इसी वर्ष बनारस के बाबू गया प्रसाद और उनके ग्रुप को उनकी प्रार्थना अनुसार मिला लिया गया था। इसी वर्ष लखीमपुर खीरी के लिए भी जांच कमीशन नियुक्त हुआ था और 1937 में लखीमपुर खीरी को मिलाया गया था। 1938 में हजियापुर, गोपालगंज के देवनसाहजी की प्रार्थना पर और ब्रह्मचारी रामानंद की रिपोर्ट पर उनके ग्रुप को मिलाया गया था। इसी वर्ष मिलने के लिए उखवां, पूर्णिया ग्रुप की दरख्वास आई। यह परिपाटी कि दरख्वास पर जांच कमीशन नियुक्त किया जाए और उसकी रिपोर्ट के आधार पर शामिल करने की परिपाटी 1967 तक चली जब 1967 के बरन (बुलंदशहर) के अधिवेशन में जब फिर से कमीशन बनाने की बात उठी तो हकीम मुकुट लाल बरनवाल, बरन और स्वागताध्यक्ष ने कहा कि "अपने पिछड़े भाइयों को मिलाने के लिए जांच कैसी? जो अपने आप को बरनवाल कहता है वो मेरा भाई है।" यह प्रस्ताव पास होने के बाद जांच कमीशन इत्यादि की बातें खत्म हो गईं। पूर्ववर्ती बिहार के हजारीबाग, कोडरमा इत्यादि इलाकों के मोदी बरनवालों को लेकर कुछ परेशानी चलती रही लेकिन अब तो रोटी बेटी के संबंधों में शायद ही कोई परेशानी रह गई है। कहने का मतलब है की 1881 से लेकर आज 2023 तक कोई 142 वर्षों में बरन वालों को एक जुट करने में कई चुनौतियां थीं। लेकिन अब सभी हिस्सों के बरनवाल एक और बराबर माने जाते हैं।

शुरू में वैवाहिक सम्बन्ध जब पूरब और पश्चिम में स्थापित हुए तो उन्हीं लोगों के बीच हुए जो "प्रमाणित" बरनवाल थे। इसी कारण मुंगेर जो बिहार में है से पश्चिम उत्तर प्रदेश के संभल इत्यादि में काफी वैवाहिक सम्बन्ध हुआ करते थे। लेकिन अब तो हर जगह के बरनवालों के आपस में वैवाहिक सम्बन्ध होने सामान्य बात है। यह जरूर है कि अभी भी अपने क्षेत्र में ही वैवाहिक सम्बन्ध करने की इच्छा के कारण ऐसे सम्बन्ध कम ही नज़र आते हैं।

पिछले 142 वर्ष में हम काफी आगे आये हैं। लेकिन इसे और आगे ले जाने अति आवश्यक है वरना क्षेत्रीय भावना परक हो कर टूट होना भी संभव है जो हमारे पूर्वजों की मेहनत पर और दूरदर्शिता पर पानी फेरने के समान होगा।

अतुल कुमार बरनवाल

बरनवाल समुदाय में समाज सुधार

महासभा के रजत जयंती समारोह की स्मारिका के संपादकीय में श्री प्रेम प्रकाश बरनवाल हजारी प्रसाद द्विवेदी के "नाखून क्यों बढ़ते हैं?" लेख का जिक्र करते हैं और कहते हैं की नख बढ़ना और नख बढ़ाने की सहज प्रवृत्ति मानव की पशुता की निशानी है। और नाखूनों को काटना मनुष्य के मनुष्य होने का प्रमाण। (नाखून बढ़ाने से हजारी प्रसाद द्विवेदी या प्रेम प्रकाश बरनवाल दोनों में से किसी का मतलब नाखून सजा संवार कर रखने वालों को पशु कहने से नहीं था।)

2. मानव विकास के आरंभिक दिनों में मानव का एकमात्र हथियार बढ़े नख ही थे। लेकिन जैसे जैसे सामाजिक संस्कारों की स्थापना हुई, विकास होते गया, नाखूनों की जरूरत खत्म होती गई। और इस कारण कभी जरूरी होते हुए भी आज नाखून पशुता की निशानी मानेजाते हैं। आगे बढ़ते हुए श्री प्रेम प्रकाश बरनवाल का कहना है कि सामाजिक कुरीतियां, विकार भी बढ़े नखों की भांति ही हैं। जिन्हें काट लेना ही हमारी मनुष्यता का प्रमाण है।

3. बरनवालों ने कैसे नख बढ़ा लिए थे? बरनवालों के ये नख कैसे कटे? इसे समझने के लिए 1905 और उसके बाद हमारे पूर्वजों के विचारों और कार्यकलापों के बारे में जानना जरूरी है. यह गौरतलब है कि आधुनिक शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण पुरानी रूढ़ियों और मान्यताओं के खिलाफ सभी जागरूक लोगों में विचार जागृत हो रहे थे. जहां राजा राम मोहन रॉय जैसे लोगों ने इन रूढ़ियों के खिलाफ बहुत पहले कार्य शुरू कर दिया था, हमारे समुदाय में यह थोड़े समय से हुआ लेकिन फिर भी समुदाय के अग्रणी लोगों ने शुरू से ही एक दूरदर्शिता से कार्य शुरू कर दिया था. यह कार्य दुरूह था क्योंकि जैसा मैंने पिछले लेख "बरनवालों की राष्ट्रीय एकता" में लिखा था, बरनवालों में अलग अलग ग्रुप (जिन्हें गिरोह लिखा गया है) बने हुए थे जिनके आपस में रोटी बेटी के सम्बन्ध भी स्थापित होने में काफी परेशानी थी. तो ऐसे मेंआधुनिक विचारों को कैसे स्वीकृति दिलाई जाये?

4. 1905 में महासभा का पहला अधिवेशन हुआ था। चुनौतियां बरनवालों को ढूंढने, साथ लाने और एकजुट करने की थीं। लेकिन साथ ही, आधुनिक शिक्षा, सोच और संस्कारों के संसर्ग से पुरानी कुरीतियों को दूर करने पर भी ध्यान दिया गया था।

5. आज यह सोचना मुश्किल लगता है लेकिन यह सत्य है की 100 वर्ष पूर्व कन्या क्रय विक्रय, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, विधवा विवाह पर प्रतिबंध, वैश्या और भांड नृत्य, कन्या अशिक्षा, महिला परदा प्रथा हमारे समुदाय में भी भली भांति विद्यमान थीं। 1906 के बरन (बुलंदशहर) के दूसरे अधिवेशन में ही विवाह पर अपव्यय, वैश्या नृत्य, बाल विवाह और अशिक्षा को दूर करने के प्रयास करने की बात की गई थी। विवाह के समय कन्या की आयु कम से कम 12 वर्ष और वर की आयु कम से कम 16 वर्ष करने का प्रस्ताव भी पारित किया गया था। फैजाबाद के 1909 के चतुर्थ अधिवेशन में भी वृद्ध विवाह, बाल विवाह, कन्या क्रय विक्रय बंद करने की बात हुई थी। 1918 के मुंगेर अधिवेशन में दिलीप नारायण सिंह (बरनवाल) ने पुनः कन्या क्रय विक्रय, विवाह में अपव्यय को दूर करने की बात कही थी। इस अधिवेशन में कन्या के विवाह के लिए उम्र 13 वर्ष और वर के लिए 17 वर्ष निर्धारित की गई थी। 1920 में भी इन प्रस्तावों को दोहराया गया। 1922 के गाजीपुर अधिवेशन में कन्या क्रय विक्रय पर जातिच्युत करने का प्रस्ताव भी पारित किया गया था। सबसे ज्यादा विवादित मामला लेकिन विधवा विवाह का था। 1923 में काशी के अधिवेशन में विधवा विवाह पर चर्चा करने से इंकार कर दिया गया क्योंकि ये धार्मिक विषय था। 1925 के मिर्जापुर अधिवेशन में यह तय किया गया कि जिन कन्याओं का जबरन सिंदूर दान किया गया हो उन्हें कुंवारी मान कर उनका पुनर्विवाह किया जाए। 70 महानुभावों ने विधवा विवाह पर चर्चा की मांग की और यह तय हुआ कि यह विषय बरनवाल चंद्रिका में लोगों का मत जानने हेतु छापा जायेगा। साथ ही इस मामले में पंडित दीनदयाल व्याख्यान वाचस्पति, लाहौर और पंडित मदन मोहन मालवीय से शास्त्रीय व्यवस्था मांगी जाएगी जिसके लिए 1925 में एक कमिटी बनाई गई थी। पंडित मदन मोहन मालवीय ने उक्त कमिटी से कहा कि पुनर्विवाह पर बिरादरी के बहुमत से निर्णय लिया जाना चाहिए

बलाई कोट के भग्नावशेष

नुमाईश ग्राउंड में लगा शिलापट

बरनवाल मंदिर, देवीपुरा, बरन

काली मस्जिद पूर्व का काली मंदिर

"|| ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै ||"

जय अहिबरन जय बरन तीर्थ

मेरी वंशावली

नाम .....

छड़ दादा की माता
.....

छड़ दादा के पिता
.....

छड़ दादी
.....

छड़ दादा
.....

परदादी
.....

परदादा
.....

दादा
.....

दादी
.....

माता
.....

पिता
.....

आप
.....

"|| ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै ||"

जय अहिबरन जय बरन तीर्थ

मेरी वंशावली

नाम .....

छड़ नाना की माता

.....

छड़ नाना के पिता

.....

छड़ नानी (पर नाना की माता)

.....

छड़ नाना (पर नाना के पिता)

.....

परनानी (नाना की माता)

.....

परनाना (नाना के पिता)

.....

नानी

.....

नाना

.....

माता

.....

पिता

.....

आप

.....

क्योंकि इस बारे में विद्वानों में मत भिन्नता है। उन्होंने यह भी कहा की विधवा होने के मूल कारण बाल विवाह, वृद्ध विवाह, कन्या क्रय विक्रय पर रोक लगाने की चेष्टा की जानी चाहिए। 1926 में एक पंच वर्षीय विधवा का विषय सामने आया और यह तय किया गया कि उसे 13 वर्ष की उम्र तक पढ़ाया जाए और उसके बाद महासभा में विषय प्रस्तुत किया जाए। 1927 के आजमगढ़ के पंद्रहवें अधिवेशन में यह निर्णय लिया गया की कार्यकर्ता भ्रमण कर के अक्षत योनि विधवा विवाह का निर्णय करने के लिए लोगों के विचार जानेंगे। इसके लिए 5 समितियां बनाई गईं थीं। विधवा विवाह पर निर्णय अगले अधिवेशन तक टाल दिया गया। 1929 में समुद्र यात्रा, विदेश यात्रा करने वालों के साथ खानपान का संबंध बनाने पर कोई रोक नहीं लगाने का प्रस्ताव पास किया गया। साथ ही बाल विवाह निषेधात्मक शारदा बिल असेंबली में पास करने पर बधाई भी दी गई। साथ ही यह भी तय किया गया कि अगर कोई बंधु बाल विवाह करता है तो महासभा उस पर मुकदमा चलाएगी। साथ ही 1 के बनिस्पत 125 मत से यह प्रस्ताव भी पास किया गया कि विधवा विवाह को आदर्श ना मानते हुए भी निसंतान विधवाओं (अक्षत योनि विधवा पढ़ें) को पुनर्विवाह की अनुमति होगी। लेकिन यह प्रस्ताव इतना क्रांतिकारी था की डर से अगले वर्ष कहीं के भी बंधु अपने यहां अधिवेशन कराने पर राजी नहीं हुए। तब जातिरत्न त्रिवेणीप्रसाद बरनवाल और दो अन्य विद्यार्थियों ने अपने ऊपर भार लेकर काशी में अधिवेशन करवाया। विधवा विवाह के प्रस्ताव का इतना भय था की अधिवेशन का सभापति बनना भी कई लोगों को स्वीकार नहीं था। बड़ी मुश्किल से ही सही लेकिन फिर से विधवा विवाह का प्रस्ताव बहुमत से पास हो गया। विधवा विवाह कार्य संचालक समिति बनाई गई और इस बारे में नियम उपनियम भी बनाए गए। एक ब्रह्मचारी रामानंद जी थे जिन्होंने विधवा विवाह के खिलाफ घूम घूम कर प्रचार किया। लेकिन फिर भी 1930 में अक्षत योनि विधवा विवाह को मान्यता दे दी गई। 1932 में विधवा विवाह करने के कारण जातिच्युत कर दिए गए लोगों को वापस मिला लिया गया और उन्हें 16 आना बरनवाल घोषित कर दिया गया। मुंगेर के 1941 के अधिवेशन की अध्यक्षता श्रीमती गोदावरी देवी ने की थी। इस समय विधवा विवाह कोश भी स्थापित किया गया लेकिन विधवा विवाह को सामाजिक मान्यता अभी भी नहीं मिल पाई थी क्योंकि इस समय विधवा विवाह के औचित्य के एक वक्तव्य पर पुनः विवाद उत्पन्न हो गया था।

6. 1931 में बाल विवाह और वृद्ध विवाह पर पुनः रोक लगाने की बात हुई। 1938 में एक स्त्री के रहते दूसरी शादी पर रोक लगाने और 40 वर्ष से अधिक की आयु होने पर स्त्री के देहांत होने पर भी दूसरा विवाह नहीं करने का प्रस्ताव पारित किया गया। शायद पहली बार यह बात भी हुई की बिना उच्च शिक्षा दिए लड़कों की शादी नहीं करनी चाहिए। 1939 में पहली बार महिला सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था। इस सम्मेलन में महासभा के पटल पर श्रीमती गोदावरी देवी बरनवाल का उदय हुआ जिन्होंने दहेज प्रथा, कन्या शिक्षा आदि पर विशेष जोर दिया। 1939 में महासभा का अधिवेशन श्रीमती गोदावरी देवी की अध्यक्षता में हुआ। विधवा विवाह की जांच के लिए तीन सदस्यों की समिति बनाई गई। गोदावरी देवी ने भ्रमण की परंपरा शुरू की जिसमें वो विभिन्न स्थानों पर जा कर बरनवाल समुदाय के लोगों से मिलती थीं। इससे अनेक जगहों पर स्थानीय बरनवाल सभाएं स्थापित हुईं। 1940 के अधिवेशन में अध्यक्ष जातिरत्न श्री त्रिवेणी प्रसाद बरनवाल ने पर्दा प्रथा को हटाने की कोशिश करने की बात की। साथ ही यह भी तय हुआ कि विवाह की पूर्व सूचना स्थानीय समिति को देनी होगी ताकि यह जांच की जा सके की कहीं कोई बेमेल विवाह तो नहीं हो रहा है। जब स्त्रियों को सभा में लाने की बात हुई तो कई लोगों ने कहा की अगर स्त्रियों ने खिड़कियों से सभा की ओर देखा भी तो वो उठ कर चले जायेंगे। लेकिन 1947 में महिलाओं के सक्रिय रूप से भाग लेने का आह्वान किया गया। 1950 में दहेज प्रथा के विरुद्ध पिकेटिंग करने का निश्चय किया गया। इसी वर्ष निसंतान विधवा (जो संयुक्त परिवार में नहीं रह रही हो) के द्वारा अपने पति के परिवार के किसी लड़के और ऐसा संभव नहीं होने पर अपने मायके के किसी लड़के और ये भी नहीं होने पर किसी भी बरनवाल लड़के को गोद लेने की अनुमति देने का प्रस्ताव पारित किया गया था।

इन कुरीतियों को दूर करने में सबसे ज्यादा चैलेंज विधवा विवाह के मामले में हुआ था। बाल विवाह, वृद्ध विवाह / बेमेल विवाह, इत्यादि के विषय में ज्यादा विवाद नहीं था, लेकिन विधवा विवाह ज्यादा विवादित था.

इसका एक कारण उस समय के विद्वान् नेताओं का मत भी था. जैसे पंडित मदन मोहन मालवीय ने भी विधवा विवाह का समर्थन करने की बजाये इसे रोकने वाले उपाय करने पर ज्यादा जोर दिया था. लेकिन इन प्रस्तावों को पास करने का यह कदापि मतलब नहीं है कि ये कुरीतियां ख़त्म हो गयी थीं. जैसा ऊपर चर्चा से पता चलता है कि विधवा विवाह 1941 में भी विवाद का कारण बना हुआ था. इसी प्रकार यह कहना कि बाल विवाह या बेमेल विवाह ख़त्म हो गया था, गलत होगा. दहेज़ प्रथा तो 1990 के दशक तक विकराल बन चुकी थी जिसके परिणामस्वरूप भ्रूण हत्या जैसी समस्याएं भी फण उठा रही थीं. कोई भी सभ्य समाज अपनी स्त्रियों को समानता का दर्जा स्वभावतः देता है. 1905 से इन सुधारों के लिए लगातार कार्य किये गए थे. यह कहना गलत होगा कि इन प्रस्तावों के कारण ही सुधार आये लेकिन समाज में इन सुधारों को मान्यता दिलवाने में समुदाय के अग्रणी लोगों और महासभा की महती भूमिका से इंकार भी नहीं किया जा सकता.

7. आज तकरीबन हरेक जगह महिला समितियां बनी हुई हैं. लेकिन श्रीमती गोदावरी देवी ने पहली बार 1939 में इसकी शुरुआत की थी. एकऔर बात कहना अनुचित नहीं होगा कि शुरू के वर्षों में सभी अधिवेशन सामाजिक मुद्दों को उठाये जाने के मंच हुआ करते थे. इनमें विवादित मुद्दों पर भी चर्चा कर ली जाती थी, जिसका परिणाम भी निकलता था. समुदाय में नए और पढ़े लिखे लोगों की अग्रणी भूमिका से सुधारों की संभावनाएं बढ़ जाती हैं जिसका उदाहरण जातिरत्न त्रिवेणी प्रसाद बरनवाल और उनकी विद्यार्थी मंडली है जिनके अथक प्रयासों से कई बार विधवा विवाह सम्बन्धी विवादों पर अंकुश लग पाया था.

8. इन कुरीतियों, इन नखों को काटने के बाद अब समुदाय आधुनिक चुनौतियों का सामना कर रहा है. जिसे प्रेम प्रकाश बरनवाल जी अधिक नख कट जाने पर दर्द की स्थिति बताते हैं. जैसे पारिवारिक मूल्यों का ह्रास, अश्लीलता, गैर कानूनी और अनैतिक विवाह (जैसे भाई बहनों में विवाह), अकेला पन और सामाजिक संबंधों में ह्रास और उसके चलते बढ़ता एकाकी पन.

9. अंतर्जातीय विवाह अवश्यम्भावी हो गए हैं और इसे सामाजिक मान्यता भी स्वतः मिल ही गयी है. लेकिन फिर भी कई पॉकेट्स में इसको लेकर मत भिन्नता है, जैसे क्या अंतर्जातीय विवाह पश्चात लड़की अपने मूल समुदाय से स्वतः निष्काषित मान ली जाएगी? जाति आधारित भेद भाव को रिजेक्ट करते हुए, समुदाय को कैसे सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और राजनैतिक रूप से आगे किया जाये यह आज की सबसे बड़ी चुनौती है. इसी प्रकार धर्म परिवर्तन का पुराना राक्षस पुनः सर उठा रहा है. कभी ये तलवार के बल पर था, आज ये लोभ और प्रलोभन के बल पर हो रहा है. आशा है कि हम एकजुट होकर इन और दूसरी नयी उठ रही चुनौतियों का मुकाबला करने में सक्षम होंगे.

अतुल कुमार बरनवाल

बरन यानी बुलंदशहर

दिल्ली से तकरीबन 80 किमी दूर है उत्तर प्रदेश का बुलन्दशहर। बुलन्दशहर वैसे तो अब दिल्ली NCR के अंदर आता है और योगी सरकार के नए औद्योगिक बेल्ट की घोषणा के बाद आजकल जमीनों के दाम भी आसमान छू रहे हैं, लेकिन इसका इतिहास इंद्रप्रस्थ और पाटलिपुत्र से कम स्वर्णिम नहीं रहा है, ना ही ये सोमनाथ और काशी से कम दुःखद है लेकिन इतिहास के चक्र में इसकी स्मृतियां खुद विस्मृत होती गईं हैं, जिस कारण इसे इतिहास के प्रति वो न्याय अभी तक नहीं मिल पाया है जो काशी, प्रयागराज और दूसरे शहरों को मिल गया है।

2. बुलंदशहर के मुख्य नुमाइश ग्राउंड के बैरन हॉल के सामने वर्ष 2008 में एक शिलापट जिला प्रशासन ने लगाया जिसके अनुसार इस शहर की स्थापना (महा) राजा अहिबरन ने की थी जब इसका नाम बरन हुआ करता था। मध्यकाल में इसका नाम बुलंदशहर कर दिया गया था। बरन के बरन बनने और बरन के फिर बुलंदशहर बनने की कहानी दर्दनाक और पलायन के असंख्य दुख से भरी हुई है। लेकिन शुरुआत हमेशा आरंभ से।

3. महाभारत काल में वरणावत प्रदेश का जिक्र है, जहां के आहार में था पांडवों का प्रसिद्ध लाक्षागृह जिससे बच कर पांडव भागे थे। ये वही प्रदेश है। महाभारत के बाद राजा परीक्षित को नागदंश का बदला लेने के लिए किया गया जन्मेजय का नाग यज्ञ भी इसी प्रदेश में किया गया था। इसके बाद राजा परमाल के समय में यहां वन को काट कर के बनछटी नामका एक कस्बा बसाया गया जिसे उनके बाद के महाराजा अहिबरन ने एक नगर के समान बड़ा किया और नाम दिया "बरन"। आजकल बुलंदशहर की अति प्रदूषित काली (कालिंदी) नदी उस समय वर्णावती नदी के नाम से जानी जाती थी। महाराजा अहिबरन के होने के संबंध में बुलंदशहर के अंग्रेज जिलाधीश एफ एस ग्राउज ने कुछ संदेह व्यक्त किया था। उनके अनुसार शायद इस नाम का कोई राजा था ही नहीं, बल्कि अहार और बरन दोनो पर शासन करने के कारण किसी राजा ने अहिबरन की उपाधि ले ली थी। अगर ऐसा भी मानें तो भी महाराजा अहिबरन के होने पर कोई संदेह नहीं रहता है। लेकिन अन्य स्रोतों में महाराजा अहिबरन के होने के बारे में कई बार चर्चा है। जैसे सूचना विभाग, उ प्र से प्रकाशित पुस्तिका" प्रगति के बढ़ते चरणः बुलंदशहर में भी इस बात का जिक्र है कि राजा अहिबरन ने यहां बरन नाम का नगर बसाया था। बुलन्दशहर जिले की आधिकारिक वेबसाइट भी बुलंदशहर के संस्थापक के रूप में महाराजा अहिबरन का ही नाम बतलाती है। जनश्रुतियों में तो महाराजा अहिबरन की चर्चा हर जगह है ही।

4. महाराजा अहिबरन को यौधेय वंशी भी माना जाता है। राहुल संकृत्यययायन ने अपनी पुस्तक जय यौधेय में यौधेय गण की चर्चा की है। करीब चौथी शताब्दी तक बचे रहने वाले और आजकल के पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा आदि क्षेत्रों में फैले इस गण को आयुधजीवी गण कहा गया है, जिनके लिए वीरता परम धर्म था। यह तय है कि अगर बरन की स्थापना पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हुई थी तो उनका यौधेयो से सीधा सीधा नाता है। राहुल सांकृत्यायन बरन से निकले बरनवालों को जो खुद को महाराजा अहिबरन के वंशज मानते हैं, यौधेयों की संतानें कहते हैं।

5. बुलंदशहर या तब के बरन पर महाराजा अहिबरन के वंशजों का शासन तकरीबन 997 ईस्वी तक चला। 997 ईस्वी में बरन पर राजा रुद्रपाल का शासन था जब अलीगढ़ के राजा हरदत्त डोर ने इस पर

आक्रमण करके कब्जा कर लिया। लेकिन इसके तुरंत बाद महमूद गजनवी के हमले शुरू हो गए। सन 1018 में गजनवी ने बरन पर हमला किया। बरन एक समृद्ध राज्य हुआ करता था और गजनवी का मूल उद्देश्य लूट पाट करना था। गजनवी के लौटने के बाद डोर वंशियों का शासन बरन पर चलता रहा। फिर मुहम्मद गोरी ने इसकी तरफ अपनी नजरें कीं । पृथ्वीराज चौहान के जीवित रहते तो बरन सुरक्षित रहा क्योंकि इसे पृथ्वीराज से मदद मिलती रही। लेकिन 1191 में पृथ्वीराज चौहान की हार के पश्चात, गोरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने बरन पर हमला किया और वहां गोरी के एक मुस्लिम मित्र को गवर्नर बना दिया। बरन के बासिंदों पर असली कहर मुहम्मद तुगलक के समय आया जब सन 1330 ईस्वी में तुगलक का आक्रमण हुआ। तुगलक पिछले आक्रमणकारियों की तरह लूट पाट तक सीमित रहने को तैयार नहीं था। बल्कि वह लोगों पर इस्लाम थोपना चाहता था। अपने धर्म की रक्षा में बरन के बासिंदों से तुगलक को विरोध का सामना करना पड़ा जिसके बाद शहर में सामूहिक कत्लेआम हुआ। शहर के मुख्य लोगों को मारकर किले के कंगूरों से लटका दिया गया। इस अत्याचार से कुछ लोग टूट कर मुसलमान बनने को मजबूर हो गए, जो बच गए वो बरन से पलायन करने को मजबूर हो गए। बरन से निकल पूर्व की दिशा में गए ये लोग बरनवाल के नाम से जाने जाते हैं। बुलंदशहर के मुस्लिम बन गए लोग बरनी मुस्लिम के नाम से जाने जाते हैं जिनके नामों के बोर्ड बुलंदशहर में बहुतायत में मिलेंगे। प्रसिद्द इतिहासकार ज़िआउद्दीन बरनी भी बरन का ही बाशिंदा था।

6. ग्राउज बुलंदशहर का नाम बरन किये जाने के पक्षधर थे। 1824 में बुलंदशहर जनपद का गठन हुआ जिसका मुख्यालय बरन को बनाया गया. 1884 में ग्राउज ने अपनी पुस्तक "Bulandshahar, Sketches of an Indian District, Social, Historical and Architectural" में बुलंदशहर का नाम बरन नहीं किये जाने पर खेद व्यक्त करते हुए लिखा था "जब इस प्राचीन ऐतिहासिक स्थान को मुख्यालय स्वीकार किया गया तो इसके प्राचीन ऐतिहासिक नाम बरन को नहीं अपनाया गया. स्पष्टतः बुलंदशहर का यह नाम औरंगजेब के शासन में इसे दिया गया जबकि सत्ताशक्ति इस सनक से ग्रस्त थी कि हर उस नाम को मिटा दिया जाये जो पुराने राज्य की यादें ताज़ा करती हों । मथुरा और वृन्दावन जैसे बड़े नगरों में भी ये प्रयोग किये गए लेकिन यहां स्थानों के नाम जन भावनाओं में इस गहराई तक जड़ें जमाये हुए थे कि वहाँ के लोगों ने साम्राज्यवादी नशे के दमन को स्वीकार नहीं किया, लेकिन बरन जैसे छोटे स्थान में जहां आबादी का अधिकांश हिस्सा मुस्लिम हो, वहाँ शासकीय भावनाओं को स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं हुई।." उनका मानना था कि बुलंदशहर का नाम बरन किए जाने में कोई विशेष परेशानी नहीं आने वाली है क्योंकि आमजन में अभी भी यही नाम जबान पर चढ़ा हुआ है।

7. आज भी बुलन्दशहर में जमीनों के पट्टों में, रजिस्ट्रियों में कस्बा बरन लिखने का प्रचलन है। मध्यकाल में मुगल शासकों के समय बरन का नाम जबरदस्ती बुलंदशहर कर दिया गया था ताकि इसकी सनातनी विरासत का नाम ओ निशान तक मिटा दिया जा सके। जबकि इलाहाबाद को प्रयागराज किया जा सकता है, बनारस को वाराणसी किया जा सकता है, मद्रास को चेन्नई किया जा सकता है तो बुलंदशहर को वापस उसका असल नाम क्यों नहीं दिया जा सकता। ये इस पुरातन शहर के साथ आज की पीढ़ी का सबसे बड़ा न्याय होगा।

अतुल कुमार बरनवाल

बरनवाल इतिहास प्रोजेक्ट

अपना इतिहास जानना सभी के लिए जरूरी है। कहा जाता है कि अभागी हैं वो पीढ़ियां जो अपना इतिहास भूल जाती हैं। श्री जगदीश बरनवाल कुंद, जाति रत्न श्री त्रिवेणी प्रसाद बरनवाल, श्री भोला नाथ बरनवाल इत्यादि ने बरनवालों के इतिहास पर काफी प्रकाश डाला है। लेकिन अभी भी अपने समुदाय के इतिहास के कई हिस्सों पर प्रकाश डालने की जरूरत है। सभी तरह की किवदंती और कहानियों से आगे ऐतिहासिक संदर्भों पर आधारित बरनवाल समुदाय का इतिहास लिखने के लिए बरनवाल इतिहास प्रोजेक्ट की शुरुआत की गई है। इस हेतु एक समिति का गठन किया गया है जिसके सदस्य हैं

1. श्री कृष्ण गोपाल गोयल (बरनवाल), बुलंदशहर/नोएडा जो दूरदर्शन से सेवानिवृत हैं।
2. श्री मेजर अमित बंसल (बरनवाल) जो भारतीय सेना से सेवानिवृत्त हैं और वर्तमान में Zee ग्रुप में कार्यरत हैं.
3. श्री अतुल कुमार बरनवाल, धनबाद / गाजियाबाद/दिल्ली जो भारत सरकार में आयकर अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं

सभी बरन वाल बंधुओं से अनुरोध है कि इस टीम का इस प्रोजेक्ट के लिए हर तरह से सहयोग करें। सभी बरनवाल सभा, समितियों और संगठनों से भी आग्रह है कि इस टीम के कार्य में हर तरह से सहयोग करें।

टीम जरूरत अनुसार समय समय पर दूसरे बंधुओं को भी इस कार्य में शामिल कर सकती है।

बरनवालों की पहली वेबसाईट

आधुनिक समय डिजिटल माध्यम का है। इसलिए बरनवाल समुदाय की भी डिजिटल माध्यम में उपस्थिति अनिवार्य है। इससे देश विदेश में बैठे सभी बंधु घर बैठे समुदाय से संबंधित जानकारियां आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

www.maharajaahibaran.com

श्री दिव्यांश बरनवाल, दिल्ली बिना किसी शुल्क वेबसाइट डेवलप करने के लिए राजी हुए हैं, इसके लिए उनका धन्यवाद।

अतुल कुमार बरनवाल

बरन तीर्थ

बरन (बुलंदशहर), उत्तर प्रदेश
(बरनवालों का सांस्कृतिक केंद्र)

बरन वालों की नगरी बरन यानी कि आजकल का बुलंदशहर। सन 997 ई0 तक बरन के राजा बरनवाल ही थे। इस नगर का नाम आज भी रेवेन्यू रिकॉर्ड में बरन ही लिखा जाता है।

बलाई कोट या ऊपर कोट बरनवालों का गढ़ हुआ करता था। बरनवालों के विभिन्न कुलों की कुलदेवी चामुंडा माता हैं। बलाई कोट में काली का एक मंदिर काली मस्जिद में परिवर्तित कर दिया गया था लेकिन बरन में आज भी चामुंडा माता का एक पुराना मंदिर मौजूद है।

इसलिए बरन हम बरन वालों का तीर्थ ही है। इसे तीर्थ के रूप में स्थापित करना और मान्यता दिलवाना ये हमारी जिम्मेदारी है।

बरनवालों में लक़ब

लक़ब एक उर्दू शब्द है जिसका अर्थ है उपाधि या पदवी. बरनवालों में 36 लक़ब कहे जाते हैं जो सब के सब प्रांतीय शब्द हैं. दरअसल बरन से पलायन के बाद विस्थापित बंधू जहां जहां बसे स्थान, व्यापार इत्यादि के हिसाब से उनके लक़ब प्रसिद्द हो गए. कुछ लोगों का मत है की लक़ब गोत्र से सम्बंधित हैं. स्व० भोलानाथ गुप्ता अपनी पुस्तक में 54 लक़ब बताते हैं.

ये लक़ब हैं: लाला वाले, बख्शी जी, हकीम जी, कानूनगोय, पिण्डारे, मोदी, कांकिया, अतरासीवाले, चिकटिया, महलवाले, निपेडिया, बेरिया, सतपुत्रा, गुहिया, खोपडिया, मुत्सद्दी, गुंढेले, लेंडिया, इमिलिया, कटारिया, कोट वाले, चौधरी, पटवारी,, बड़ वाले, बरैया, जौन पुरिया, काशिजिया, कठेरिया, सौन पुरिया, बबुकसिया, मालहन, पटसरिवा, मनिया, नागर, नैरचिया, लोखरिया, खेलाउन, ककरिया, बजाज, ठेलरिया, मनहरिया, सरोतन, सीमरिया, जैरवरिया, खरबसिया, पांच लोखरिया, कुलीन, रुपीहा, मिरीचीहा, ठेकमनिया, मकरिया, सूरत, गंजवाले.

अतुल कुमार बरनवाल

बरनवाल गोत्र

बरन वालों के कितने गोत्र होते हैं? स्व० भोला नाथ गुप्ता बरनवालों में 5 गोत्र पाए जाने की बात लिखते हैं जो हैं गोईल/गोहिल, वत्सल, कश्यप, सिंघल, गर्ग। लेकिन कई संदर्भों में बरनवालों के 18 गोत्रों की चर्चा है। वहीं एक दूसरे संदर्भ में बरनवालों के 36 गोत्र लिखे गए हैं और उनसे ही जुड़े हुए हैं 36 लकब। ये गोत्र और उनसे संबंधित लकब हैं $

क्रम	गोत्र	अल्ले
1	गर्ग	संभलपुरिया
2	वात्सेल	बदऊआ
3	गोवाल	सेरातन
4	गोहिल	नकथरिया
5	कराव	कसाजिया
6	देवल	नागर
7	कश्यप	ढेक
8	वत्स	खेलावन
9	अत्रि	मनहरिया
10	वामदेव	जपखरिया
11	कपिल	चौधरिया
12	गालब	लोखरिया
13	सिंहल	कुलीन
14	आरण्य	ककरिया
15	काशिल	बजाज
16	उपमन्यु	टेकमानियां
17	याज्ञवलक्य	जेरफुरिया
18	यैमिनी	मालहन

क्रम	गोत्र	अल्ले
19	पराशर	बबुकनसिया
20	कौशिक	पटसरिया
21	मौनस	पंच लोखरिया
22	कात्यायन	कठारिया
23	कौनडिल्यम	सेठ
24	पुलिष	मकरिया
25	भृगु	खरबसया
26	सर्वाय	बरिया
27	आंगिरा	धगर
28	कृष्णाभी	रूपेहा
29	उद्दालक	ठग
30	आश्वलायन	मिरिचिया
31	भारद्वाज	बटराज
32	सांकृत	ठेलरिया
33	मुद्गल	नैरचैया
34	यमदग्नि	मानिया
35	च्यवन	पुरवार
36	वेदप्रमिति	सोनपुरिया

लेकिन क्या आपको पता है कि रोहिला क्षत्रियों में एक गोत्र बरनवाल भी होता है। एक गोत्र बरनपाल भी है। एक यौधेय भी। कहने का मतलब है कि यौधेय गण से निकले हुए कई समुदायों में से एक है बरनवाल। लेकिन संभवतः बरनवाल सिर्फ वही नहीं हैं जो हम हैं। रोहिलखंड आजकल का पश्चिमी उत्तर प्रदेश है जो हमारा उद्गम स्थल भी रहा है। संभवतः हमारे जिन बंधुओं ने व्यापार को अपना पेशा नहीं बनाया वो बरनवाल/बरनपाल रोहिला क्षत्रियों के रूप में जाने गए। और ये सब एक ही यौधेय गण से निकले थे।

अतुल कुमार बरनवाल

$ सन्दर्भः (बरनवाल दर्शन 1955, स्मारिका 1981)

बरनवालों की कुलदेवी

बरनवालों की कुल देवी कौन हैं? आश्चर्य की बात है कि ये किसी को भी नहीं पता था। स्व० भोलानाथ गुप्ता की 1937 की पुस्तक में बरनवालों के कोई 54 कुल/लकब/अल्ले की चर्चा है। हर कुल के बारे में लिखते समय स्व० गुप्ता उनके कुलदेवता और कुलदेवी की भी चर्चा करते हैं। इन सभी कुलों की कुलदेवी माता चामुंडा लिखी गई हैं। इससे यह कहना उचित होगा कि बरनवालों की कुल देवी माता चामुंडा हैं। फिर मैंने यह भी विचार किया कि क्यों हमारी कुलदेवी माता चामुंडा हैं। बरन के बगल में है कर्णवास, जिसके बारे में किवदंती है कि यहां राजा कर्ण हर दिन उबलते कड़ाहे में कूद कर अपनी आहुति माता चामुंडा को देता था। माता चामुंडा हर दिन उसे जीवित कर के उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर उसे सवा मन सोना देती थी जिसे वो जनता में बांटा करता था। इस कहानी से यह पता चलता है कि माता चामुंडा का कर्णवास का मंदिर महाभारत काल का है। यह कोई आश्चर्य नहीं कि इस इलाके में रहने वाले बरन वालों की कुलदेवी भी माता चामुंडा ही हों। बरन के देवीपुरा में भी माता चामुंडा का प्राचीन मंदिर है। बरन के आस पास अनूपशहर (जिसकी स्थापना भी महाराजा अहिबरन के वंशज राजा अनूप राय ने की थी) और दूसरी जगहों में भी माता चामुंडा के मंदिर विद्यमान हैं। कुलदेवी के बारे में यह कहा जाता है कि उनका मूल मंदिर उस जगह जरुर होना चाहिए जहां से कुल की उत्पत्ति हुई है। इस हिसाब से भी माता चामुंडा हमारी कुलदेवी होती हैं। कुलदेवी कुल की प्रथम पूज्या मानी जाती हैं। पलायन, इतिहास लेखन के अभाव में, आक्रांताओं के डर से पहचान छुपाने के कारण और आजकल के समय में मूल से कट जाने के कारण अक्सर लोग कुल देवी के बारे में भूल जाते हैं। कुछ ऐसा ही बरन वालों के साथ भी हुआ है।

2. वैसे गूगल करेंगे तो चोटिला, गुजरात में और हिमाचल के कांगड़ा में भी माता चामुंडा के मंदिर अवस्थित हैं।

3. माता चामुंडा दरअसल माता पार्वती का एक काली अवतार ही हैं जिन्होंने चंड और मुंड नाम के असुरों का वध किया था इसलिए उनका नाम चामुंडा पड़ा था। अध्यात्म में चंड प्रवृत्ति और मुंड निवृति का नाम कहा जाता है और माता चामुंडा अर्थात जगदम्बा प्रवृत्ति और निवृति दोनो से छुटकारा दिलाती हैं और मोक्ष प्रदान करती हैं, इसलिए उन्हें माता चामुण्डा कहा जाता है।

4. वैसे कहा जाता है कि बरन के बलाई कोट के किले में भी एक काली मंदिर अवस्थित था जिसे मध्य काल में काली मस्जिद बना दिया गया था। आज भी बलाई कोट के किले के भगनवशेषों के सामने आप इस काली मस्जिद को देख सकते हैं।

5. इसलिए यह तय है कि माता चामुंडा ही हमारी कुलदेवी हैं।

6. माता चामुंडा का कल्याणकारी मंत्र है

"।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै ।।"

बरनवालों के पुरोहित

बरनवालों के पुरोहित गौड़ ब्राह्मण कहे जाते हैं.

अतुल कुमार बरनवाल

हर घर अहिबरन

महाराजा अहिबरन जन्मोत्सव, 2023 (बरन) सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं है बल्की सभी बरन वालों को एक सूत्र में बांधने की शुरुआत है, अपनी पहचान को मजबूत करने और इतिहास को बचाने की मुहिम है।

हम कहीं भी रहें, एक बात हमें एक दूसरे से बांध कर रखती है, वो है, कि हम बरन वाले हैं, और हम महाराजा अहिबरन के वंशज हैं। इसी कड़ी में हम आह्वान करते हैं, हर एक बंधु से कि अपने घर और/या प्रतिष्ठान में अपने आदिपुरुष की तस्वीर जरूर लगाएं और गर्व से अपने आपको महाराजा अहिबरन के वंशज बताएं। एक तस्वीर फ्रेम करवा कर लगाना बिल्कुल आसान काम है।

जिन से संभव हो, अपने पूजा स्थल में महाराजा अहिबरन की मूर्ति को भी जरूर स्थान दें।

बरन बंधु

बरन बंधु को बढ़ना है
तो बंधना होगा एक सूत्र में।

अन्यायों से लड़ना है और गौरवशाली बनना है
तो बंधना होगा एक सूत्र में।

बरन* से भागे घाट घाट में, नगर नगर में
अब जो हमको थमना है तो बंधना होगा एक सूत्र में।

नहीं सिवान के चंदा** जैसे मरना है
तो बंधना होगा एक सूत्र में।

नई सदी में, नए गगन् में, ऊंचे अब
जो उड़ना है तो बंधना होगा एक सूत्र में।

थाम के डोरी सभी जनों की
और उन्हें भी करने आगे
बंधना होगा एक सूत्र में।

दुश्वारी और अपन्नता को छोड़ के जो अब,
खुद के द्वंद्व से लड़ के आगे बढ़ना है
तो बंधना होगा एक सूत्र में।

बरन सुता को भी,
अब आगे, जो करना है
तो बंधना होगा एक सूत्र में।

सभी समाज की कुरीतियों को,
करके पीछे, नए समय में चलना है
तो बंधना होगा एक सूत्र में।

तोड़ के अंतर उपजाति का, और स्वर्ण का,
और व्यर्थ के अभिमान का,
बंधना होगा, हम सब को अब एक सूत्र में।

***

अतुल कुमार बरनवाल

बरनवाल जयघोष

हम अहिबरन के वंशज, बरनवाल जयघोष करे ।।
दुखियो के हम दुःख हरे, दुष्टो पर हम रोष करे।
हम अहिबरन के वंशज बरनवाल जय घोष करे ।।

धनपाल गुणाधि की संताने, हम योद्धा थे यौधेय थे।
शहर बरन है जन्मभूमि, राजकीय अजेय थे।
सर्व भूमि पर विस्तारित हो, हम धन सम्पदा का कोष भरे ।।

हम अहिबरन के वंशज बरनवाल जयघोष करे ।
दुखियो के हम दुःख हरे, दुष्टो पर हम रोष करे।
हम अहिबरन के वंशज बरनवाल जय घोष करे ।।

निस्वार्थ विनम्र स्वभाव है अपना, पालन करते वैश्य धर्म का ।
भाग्य भरोसे नही बैठते, करते अखंड विश्वास कर्म का।
मानव समाज की सेवा को, हम सब के जीवन में जोश भरे ।।

हम अहिबरन के वंशज, बरनवाल जयघोष करे ।।
दुखियो के हम दुःख हरे, दुष्टो पर हम रोष करे ।
हम अहिबरन के वंशज बरनवाल जय घोष करे ।।

है हृदय मे शक्ति भरी हुई, आगे ही बढ़ते जायेगे ।
मीठी वाणी समृद्धि से विन्ध्य पर्वत को चढ़ जायेगे ।
दान धर्म मे प्रवीण है हम, विनम्रता का कोष झरे ।।

हम अहिबरन के वंशज बरनवाल जयघोष करे,
दुखियो का हम दुख हरे, दुष्टो पर हम रोष करे ।
हम अहिबरन के वंशज बरनवाल जयघोष करे ।।

प्रवीण बरनवाल, विंध्याचल धाम

बरनवाल धर्मशालाओं का विवरण

S.No.	Name	Address	City	State	Manager	Mobile No.
1	बरनवाल सेवा सदन	कबीर चौरा, बड़ी पियरी, वाराणसी	वाराणसी	उत्तर प्रदेश	श्री शिवकांत आर्य	7007478411
2	बरनवाल धर्मशाला	तुलसी उद्यान के पीछे, नया घाट	अयोध्या	उत्तर प्रदेश	श्री चंदन बरनवाल	9236086080
3	बरनवाल सेवा सदन	गैस लाल चौक, पुरानी गुदड़ी	बेतिया	उत्तर प्रदेश	श्री विजय बरनवाल, श्री राकेश बरनवाल	9415320577
4	बरनवाल सेवा सदन	निकट कसया रेलवे क्रॉसिंग	देवरिया	उत्तर प्रदेश	श्री विनय बरनवाल	9415968499
5	बरनवाल धर्मशाला	स्टेशन के पास	सुल्तानपुर	उत्तर प्रदेश	श्री आलोक बरनवाल	9415968499
6	बरनवाल धर्मशाला	सिंधी कॉलोनी रौजा	मऊ	उत्तर प्रदेश	श्री किशुन बरनवाल	9415219209
7	बरनवाल सेवा सदन	नदावर घाट रोड, सलेमपुर	देवरिया	उत्तर प्रदेश	श्री विद्यासागर बरनवाल	9453682500
8	दसई राम बरनवाल धर्मशाला	गोहना	मोहम्मदाबाद	उत्तर प्रदेश	श्री अनिल बरनवाल, श्री गोपाल बरनवाल	9935038205 /9336509070
9	हकीम मुकुटलाल बरनवाल धर्मशाला(निजी)	चौक बाजार	बुलंदशहर	उत्तर प्रदेश	श्री सुरेश गर्ग	9837305640
10	बरनवाल सेवा सदन	बलैया, वाराणसी रोड	आजमगढ़	उत्तर प्रदेश	श्री श्रीकांत बरनवाल	9450214017
11	मोहन बरनवाल सेवा सदन	पक्का घाट, मेन मार्केट सैदपुर	गाजीपुर	उत्तर प्रदेश	श्री रानू बरनवाल	8115533353
12	बरनवाल सेवा सदन	ब्रह्मकुंड के निकट, विरायतन रोड	राजगीर	बिहार	श्री मोहन बरनवाल, श्री उमाशंकर बरनवाल	6299330484 /8210442057
13	श्री मोहनलाल जीरादेई बरनवाल सेवा सदन	स्वराज्यपुरी रोड	गया	बिहार	श्री कुन्दन प्रकाश	9304050330
14	श्री बरनवाल सेवा सदन	गोल पत्थर	गया	बिहार	श्री नारायण प्रसाद	9415320577
15	बरनवाल सेवा सदन	विंध्यवासिनी पथ, कदम कुआं	पटना	बिहार	प्रबंधक	9415968499
16	अहिबरन पैलेस	काली चौक, गढ़ पर	नवादा	बिहार	श्री कृष्ण प्रसाद, शशि रंजन कुमार	8987373909/9835104306
17	बरनवाल सेवा सदन	पुरानी बाजार	नवादा	बिहार	श्री मनोज बरनवाल	9334173468
18	बरनवाल सेवा सदन	वजीरगंज	गया	बिहार	श्री राजेश बरनवाल/श्री संजय बरनवाल	9973623101 /7870814841
19	बरनवाल सेवा सदन	मेन रोड	हिसुआ	बिहार	श्री जयकांत बरनवाल, श्री ओमप्रकाश बरनवाल	8002183497
20	बरनवाल सेवा सदन	ठाकुरबाड़ी मंदिर	रजौली	बिहार	श्री धनंजय बरनवाल, श्री विकास बरनवाल	7050523330 /9939978368
21	बरनवाल सेवा सदन	नायक गली ऊपर बाजार गोविंदपुर	नवादा	बिहार	श्री लक्ष्मी बरनवाल, श्री रंजीत बरनवाल	8340535260
22	बरनवाल सेवा सदन	बकसौती	नवादा	बिहार	श्री पवन बरनवाल	9934493892
23	बरनवाल सेवा सदन	मरपसौनी गली दुर्गास्थान	शेखपुरा	बिहार	श्री पप्पू बरनवाल, श्री सुभाष बरनवाल	9386542078 /9431202303
24	बरनवाल सेवा सदन	महुआतल बरबीघा	बरबीघा	बिहार	श्री पप्पू बरनवाल, श्री राजन बरनवाल	8084496826 /9931656308
25	बरनवाल सेवा सदन	लगमा नहर, महीसौड़ी, सिकंदरा रोड	जमुई	बिहार	श्री राजेश बरनवाल, श्री जयप्रकाश बरनवाल	8709826300
26	बरनवाल सेवा सदन	महादेव सिमरिया	सिमरिया	बिहार	श्री ओंकार बरनवाल	9504275776
27	बरनवाल सेवा सदन	बस्तीपर मलयपुर	मलयपुर	बिहार	श्री राजकिशोर बरनवाल	9709682692
28	बरनवाल सेवा सदन	जयप्रकाश चौक,	चकाई बाजार	बिहार	श्री विजय बरनवाल, श्री रमेश बरनवाल	9973497629 /9006141400
29	बरनवाल सेवा सदन	गांधी चौक, पुरानी बाजार	झाझा	बिहार	प्रबंधक, श्री गोपाल बरनवाल	8603592609 /9006710824
30	बरनवाल सेवा सदन	झाझा रोड, सोनो	सोनो	बिहार	श्री अवधेश बरनवाल	8789063056
31	बरनवाल सेवा सदन	माधोपुर, मुंगेर	मुंगेर	बिहार	सचिव	9431409648
32	बरनवाल रेस्ट हाउस	वी एम फील्ड गोपालगंज	गोपालगंज	बिहार	श्री ज्योतिप्रकाश बरनवाल	9708706351 /7739961619
33	बरनवाल सेवा सदन	नेचुआ जलालपुर	जलालपुर	बिहार	श्री प्रकाश बरनवाल	9934969232

उपलब्ध जानकारी के आधार पर

www.maharajaahibaran.com

34	कासो लाल सूरत देवी बरनवाल सेवा सदन	मेन बाजार, वार्ड न.7, दलसिंहसराय	समस्तीपुर	बिहार	श्री अनिल बरनवाल, श्री विकास बरनवाल	9430489099 /9525687366
35	गंगोत्री देवी गुलाब लाल विवाह भवन	ढाब मुहल्ला, वार्ड न.15, रोसड़ा	रोसड़ा	बिहार	श्री सुधीर बरनवाल, श्री मुन्ना बरनवाल	7004079270 /9934917319
36	बरनवाल सेवा सदन	रक्सौल	रक्सौल	बिहार	मुखिया जी	9431081470
37	बरनवाल वैश्य अतिथि भवन	बेल्थरा रोड, पुलिस चौकी के पास, धर्मशाला गली	बलिया	बिहार	श्री पुरुषोत्तम बरनवाल, श्री अनुपम बरनवाल	9415690091 /9839889242
38	मोदी सेवा सदन	रजगड़िया रोड, झुमरीतिलैया	कोडरमा	झारखंड	अहिवरण वंशज अध्यक्ष	7909082797
39	चोवा राम मोदी धर्मशाला	गाँधी स्कूल रोड, झुमरीतिलैया	कोडरमा	झारखंड	अहिवरण वंशज अध्यक्ष	7909082797
40	वर्णवाल सेवा सदन, कोडरमा	राँची पटना रोड, नियर हनुमान मंदिर	कोडरमा	झारखंड	अजित वर्णवाल	9835779228
41	बरनवाल सेवा सदन	कचहरी रोड	देवघर	झारखंड	श्री राजकुमार बरनवाल	9431547948
42	बेनी लाल बरनवाल सेवा सदन	मंदिर गेट	बासुकीनाथ	झारखंड	प्रो रंजीत, श्री राजकुमार बरनवाल	9431548478 /9431547948
43	बरनवाल सेवा सदन	यदुवंश नगर,	चास	झारखंड	सचिव	9835192019
44	बरनवाल सेवा सदन	रामगढ़ रोड,	जैना मोड़	झारखंड	श्री सदानंद बरनवाल	7004040940
45	बरनवाल सेवा सदन	अरघाघा रोड,	इसरी बाजार	झारखंड	श्री संतोष बरनवाल	8409443818
46	बरनवाल सेवा सदन	गिरिडीह	गिरिडीह	झारखंड	श्री लखन बरनवाल	9431184401
47	बरनवाल सेवा सदन	तिसरी	तिसरी	झारखंड	श्री लक्ष्मण मोदी	9431182031
48	बरनवाल सेवा सदन	स्टेशन रोड	सरिया	झारखंड	श्री परमेश्वर मोदी	9939121525
49	बरनवाल रिलीफ सोसाइटी भवन	गौशाला मोड़, आसनसोल	आसनसोल	पश्चिम बंगाल	श्री अनिल बरनवाल	9832262386
50	बरनवाल सेवा सदन	उखड़ा	बर्धमान	पश्चिम बंगाल	श्री शक्ति मोदी, श्री मोहन बरनवाल	9333883209 /7866028600
51	बरनवाल सेवा सदन	89, पथरिया घाट स्ट्रीट, निकट बिनानी धर्मशाला	कोलकाता	पश्चिम बंगाल	श्री गया बरनवाल, श्री मदन बरनवाल	9339946443 /9433113074
52	बरनवाल गेस्ट हाउस(निजी)	उदयपुरा रोड, मेंहदीपुर बालाजी	दौसा	राजस्थान	अजय बरनवाल	9610247100
53	बरनवाल सेवा सदन(निजी)	वीरगंज	नेपाल	नेपाल	श्री रविन्द्र बरनवाल	9855022852
54	बरनवाल सेवा सदन	ईसरी बाजार (पारसनाथ रेलवे स्टेशन)	गिरिडीह	झारखंड	संतोष बरनवाल	8409443818
55	बरनवाल सेवा सदन	विष्णुगढ़	हजारीबाग	झारखंड	विजय कुमार उर्फ गुड्डू	9934339021
56	बरनवाल सेवा सदन	गाल्होबार	हजारीबाग	झारखंड	किशोरी बरनवाल	9798304631

उपलब्ध जानकारी के आधार पर

बरनवाल चंद्रिका

1881 ईस्वी में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बरनवाल बंधुओं में संगठन का निर्माण करने की भावना जागृत हुई और बुलंदशहर के आस पास के बंधुओं की पहली बैठक जरगांव मुरादाबाद में 1881 में हुई। मुंशी तोताराम जी, जरगांव ने "बरनवाल उपकारक" नामक एक उर्दू पत्र का प्रकाशन भी किया लेकिन मतभेद के चलते इसका प्रकाशन बंद हो गया।

1905 ईस्वी के पहले महासभा अधिवेशन में बाबु दुर्गा प्रसाद, मुरादाबाद की देख रेख में एक ऊर्दू पत्रिका "बरनवाल सहायक" के नाम से निकालने का निश्चय हुआ था। 1909 तक यह पत्रिका निकली भी। 1909 से 1918 तक के बीच वित्तीय परेशानी के चलते इसका प्रकाशन बंद हो गया।

मुंगेर के 6ठे अधिवेशन, 1918 ईस्वी में बरनवाल चंद्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ। 1919 में इसके ऊर्दू में निकाले जाने की मांग उठी थी लेकिन अध्यक्ष श्री धर्मनारायणं सिंह ने इसे हिंदी में ही निकालने की बात की।

डा0 त्रिवेणी प्रसाद के सम्पादन काल में 1930 ईस्वी में इसमें छपे कुछ लेखों पर सरकार ने आपत्ति की थी और रू 500 की जमानत संपादक और मुद्रक सीताराम प्रेस पर लगाई थी। 1942 में डा0 त्रिवेणी प्रसाद बरनवाल की संपादकीय टिप्पणी से रूष्ट सरकार ने बरनवाल चंद्रिका का प्रकाशन दो महीनों के लिए बंद करवा दिया था।

(बरनवाल दर्शन और न्यास निर्देशिका, 1992 से साभार)

रजत जयंती अधिवेशन

"25वां रजत जयंती अधिवेशन महासभा के जीवन का एक प्रमुख अधिवेशन रहा। बेतियाराज उच्च विद्यालय के विशाल प्रांगण में सुंदर भव्य पंडाल बना था, जिसमें अति मनोरमशाही शामियाना खड़ा किया गया था। यज्ञशाला एवं अन्य सजावटों के अतिरिक्त अत्यंत कलापूर्ण निर्मित अग्रसेन द्वार पर नौबत बज रही थी। जुलूस की सजावट अवर्णनीय एवं दर्शनीय थी। अनुपम ढंग से सजाए हुए शिवालयकार रथ में विशाल एवं सुन्दर 25 श्वेत बैल जुड़े हुए थे, तथा उस स्थपर शांतचित्त शौम्य मूर्ति प्रो जयदेव प्रसाद दोनो हाथ जोड़े जनता का अभिवादन करते हुए बैठे थे। सबसे आगे 25 साइकिल सवार दो दो कतार में बैजन्ती पताका लिए चल रहे थे। इनके पीछे हाथियों की कतार थी। उसके पीछे लगभग 2000 बरनवाल भाई पैदल मार्चिग गीत गाते हुए, भारत माता एवं बरनवाल महासभा की जय मनाते, प्रो जयदेव प्रसाद जिंदाबाद, तिलक दहेज प्रथा का नाश हो, विधवा विवाह जायज है आदि नारे लगाते हुए चल रहे थे। उनके पीछे बैंड बाजा, पीछे सभापति का सुंदर एवं विशाल 25 बैलों वाला रथ चल रहा था। इनके अतिरिक्त फिटीन आदि अनेक सवारियां जुलूस की शोभा बढ़ा रही थीं। जुलूस मार्ग के चौराहों पर बड़े बड़े द्वार बने हुए थे, जिन पर शहनाई बज रही थी। प्रत्येक द्वार पर सभापति जी की आरती उतारी गई तथा चंदन एवं फूल मालाओं से उनका अपूर्व स्वागत हुआ। साढ़े तीन घंटों में बेतिया शहर के मुख्य मुख्य सड़क का परिभ्रमण करता हुआ यह विशाल जुलूस महासभा पंडाल में आकर रुका।"

(बरनवाल दर्शन, 1955)

श्री भारत वर्षीय बरनवाल वैश्य महासभा, वाराणसी के अधिवेशन (1988 तक)

अधिवेशन क्रमांक	ईस्वी	स्थान	सभापति
1	1905	काशी	गौरीशंकर लाल, रसड़ा
2	1906	बुलंदशहर	प्रसादी लाल, बुलंदशहर
3	1907	मऊ	महादेव प्रसाद बरनवाल, गोरखपुर
4	1909	अयोध्या	विंध्याचल प्रसाद रईस, गोरखपुर
5	1909	देवरिया	दिलीप नारायण सिंह, मुंगेर
6	1918	मुंगेर	धर्मनारायण सिंह, मुंगेर
7	1919	सुल्तानपुर	गोविंद प्रसाद बरनवाल, सिकंदरपुर
8	1920	बरहज	चुन्नालाल बरनवाल, मुरादाबाद
9	1921	फूलपुर	भरत प्रसाद बरनवाल, कोइरीपुर
10	1922	सैदपुर	भरत प्रसाद बरनवाल, कोइरीपुर
11	1923	काशी	शिवशंकर प्रसाद बरनवाल, मुख्तार, आजमगढ़
12	1924	मिर्जापुर	केशरीलाल, बहजोई
13	1925	कानपुर	हरिदास बरनवाल, निजामाबाद
14	1926	मैरवां	ब्रह्मचारी रामानंद, दलसिंह सराय
15	1927	आजमगढ़	हरिहर प्रसाद, सिकंदरपुर
16	1929	काशी	देवकीनंदन प्रसाद रईस, मुंगेर
17	1931	जौनपुर	रायबहादुर दिलीप नारायण सिंह, मुंगेर
18	1932	देवरिया	दिलीपनारायण सिंह,
19	1937	रक्सौल	गणेश प्रसाद गुप्त, बरहज
20	1938	मऊ	देवकीनंदन प्रसाद, मुंगेर
21	1939	गोरखपुर	गोदावरी देवी, लखमीपुर खीरी
22	1940	हाजीपुर	डा0 त्रिवेणी प्रसाद बरनवाल, काशी
23	1941	शेखपुरा	गोदावरी देवी
24	1944	महाराजगंज	धर्मदत्त गुप्त, आजमगढ़
25	1944	बेतिया	प्रो जयदेव प्रसाद गुप्त, चंदौसी
26	1945	वारसलीगंज	कृष्ण प्रसाद रईस, मुंगेर
27	1946	खमरिया	विष्णु लाल, चानन
28	1947	लखीमपुर खीरी	हरिनारायण प्रसाद, बेतिया
29	1948	बहजोई	शिव गुलाम प्रसाद, बेतिया
30	1950	काशी	खेद हरण लाल, बिहार शरीफ
31	1951	गिरिडीह	गदाधर प्रसाद बरनवाल, मांझी
32	1952	वैद्यनाथ धाम	शीतला प्रसाद बरनवाल, मिर्जापुर
33	1953	झुमरी तिलैया	रामवृक्ष लाल बरनवाल, बेतिया
34	1955	पटना	भुवनेश्वर प्रसाद बरनवाल, पटना
35	1957	गया	भुवनेश्वर प्रसाद बरनवाल, पटना
36	1958	आसनसोल	डा0 त्रिवेणी प्रसाद बरनवाल, काशी
37	1960	वाराणसी	कृष्ण चंद्र बरनवाल, बेतिया
38	1964	गोरखपुर	भुवनेश्वर प्रसाद बरनवाल, पटना
39	1967	वाराणसी	गोदावरी देवी
40	1967-68	बुलंदशहर	प्रो रघुनाथ प्रसाद बरनवाल, गोरखपुर
41	1968	संभल	सत्यनारायण प्रसाद गुप्त, आजमगढ़
42	1971	लखनऊ	सत्यनारायण प्रसाद गुप्त, आजमगढ़
43	1976	राजगीर	यमुना प्रसाद बरनवाल, गया
44	1978	वाराणसी	डा0 श्रीनिवास गोयल, बरेली
45	1981	झंझारपुर	विंध्याचल प्रसाद बरनवाल, वाराणसी
46	1984	लखीमपुर खीरी	विंध्याचल प्रसाद बरनवाल, वाराणसी
47	1988	देवघर	प्यारेलाल बरनवाल, नवादा

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै

जय अहिबरन जय बरन तीर्थ

महाराजा अहिबरन जन्मोत्सव, 2023 (बरन)

श्री / श्रीमती / सुश्री .....

पिता ..... पता .....

का महाराजा अहिबरन जन्मोत्सव, 2023 (बरन) में उपस्थित होने के लिए धन्यवाद |

ह./-

आयोजन समिति
महाराजा अहिबरन जन्मोत्सव,
2023 (बरन)

www.maharajaahibaran.com

बरनवाल-दर्शन

समागत प्रतिनिधिगण

श्री भारतवर्षीय बरनवाल वैश्य महासभा प्रथम अधिवेशन, काशी सन् १९०५ ई० ।

स्थान श्रीमान् बाबू शिवप्रसादजी रईस की कोठी (काठ की हवेली) सन् १९०५ ई०

बैठे हुए बाएँ से चौथी पंक्ति में सर्व प्रथम स्व० मास्टर बहरायचीलाल काशी स्वागताध्यक्ष तथा सर्वतृतीय स्व० गौरीशंकरलाल, रसड़ा, सभापति (पृष्ठ १२)

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि महासभा के जन्मकाल की फोटो बहजोई जिला मुरादाबाद निवासी, बाबू केशरीलालजी की उदारता से मिल गई। महासभा का जन्म १९०५ ई० में पूर्वीय और पश्चिमीय भाइयों के प्रथममिलन के रूप में हुआ। इस आयोजन का अधिकांश श्रेय बाबू गोविन्दप्रसादजी, सिकन्दरपुर, मुन्शीदुर्गाप्रसादजी, मुरादाबाद, लालालक्ष्मणप्रसादजी, अरगाँव, लालाभगवतीप्रसाद, बुलन्दशहर, मुंशी तोताराम अरगाँव, मुंशी विशुनदयाल, बुलन्दशहर, बा० गौरीशंकरलालजी रसड़ा, बा० जयश्रीलालजी, रसड़ा, बा० जवाहरलालजी मऊ, डाक्टर त्रिवेणीप्रसादजीबरनवालके पिता मास्टर बहरायचीलालजी, स्वागताध्यक्ष काशी तथा श्रीधर्मदत्तजीके पिता डाक्टर भगौलूराम, मऊ, श्रीगोपालरामजी, दलसिंहराय, श्रीमानन्दकुमारजी, श्रीमान् मथुराप्रसादजी तथा श्रीमान बाल्मीकिप्रसादजी, मुँगेर आदि महानुभावों को है। अनेक सज्जनों का नाम और परिचय ज्ञात न होने के कारण पूर्ण परिचय देना कठिन है।

1905 ई० के प्रथम महासभा अधिवेशन की तस्वीर

(यहाँ से काटें)
(यहाँ से काटें)
(यहाँ से काटें)
(यहाँ से काटें)
(यहाँ से काटें)
(यहाँ से काटें)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै

जय अहिबरन

जय बरन तीर्थ

महाराजा अहिबरन

बरन वालों के आदि पुरुष और बरन (बुलंदशहर) के संस्थापक

महाराजा अहिबरन जन्मोत्सव, 2023 (बरन)

(फ्रेम करवा कर घर पर लगाने के लिए)

सभी बंधुओं को महाराजा अहिबरन जन्मोत्सव की हार्दिक बधाई।

SS ट्रेडर्स

अमित बरनवाल

अनुज बरनवाल

Deals in Cement, Iron Steel and all Kind of Building materials.

Authorised Stockist: Prism Johnson Ltd

जंगी रोड, मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश 231001

9415205925, 9415205924

सभी बंधुओं को महाराजा अहिबरन जन्मोत्सव की हार्दिक बधाई।

CA कामेश्वर प्रसाद बरनवाल

Kameshwar Baranwal & Co

ऑर्डरली बाजार, वाराणसी, 221002

9450183007, 9336913158

सभी बंधुओं को महाराजा अहिबरन जन्मोत्सव की हार्दिक बधाई।

बरनवाल समुदाय की पताका

जन्मोत्सव के पहले श्री प्रभु दयाल बरनवाल, परोसिया, पश्चिम बंगाल का यह सुझाव आया कि बरनवालों की एक पताका होनी चाहिए। इस सुझाव पर आगे बढ़ते हुए एक पताका प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें 23 लोगों ने पताकाओं की प्रविष्ठियां भेजीं। इन सब में से एक पताका का चुनाव निर्णायक मंडल ने किया। श्री अमित कुमार बरनवाल, बर्दवान, पश्चिम बंगाल द्वारा भेजी गयी ये पताका बरनवालों की पताका के रुप में स्वीकार की गई है।

बरनवालों में प्रथम

बरनवालों में पहले वकील श्री भरत प्रसाद बरनवाल, हाजीपुर, बिहार से हुए थे। जिन्होंने 1894 में 22 वर्ष की उम्र में बैचलर ऑफ लॉ किया था।

बरनवालों में पहले इंजीनियर थे श्री प्रसादी लाल बरनवाल जिनका जन्म 1846 में हुआ था और ये बरन के ही रहने वाले थे।

बरनवालों में पहले न्यायमूर्ति श्री राम नारायण लाल (बरनवाल) जिनका जन्म 1929 में हुआ था और जिन्होंने 1952 में बैचलर ऑफ लॉ किया था, 1958 में मुंसिफ नियुक्त हुए थे। 1980 में मुजफ्फरपुर में जिला और सत्र न्यायाधीश बने थे। बाद में पटना उच्च न्यायालय से सेवानिवृत्त हुए थे।

श्री भगवान दास बरनवाल, मिर्जापुर जिनका जन्म 1920 में हुआ था 1962 से 1967 तक उत्तर प्रदेश में विधान सभा सदस्य (MLA) रहे थे। संभवतः ये बरन वालों में पहले MLA थे।

बरनवालों में प्रथम IAS संभवतः श्री अरुण कुमार सिन्हा (बरनवाल), सिवान के, 1964 बैच के थे। श्री उमाशंकर प्रसाद 1961 में IDAS बने थे। श्री अरविंद प्रसाद 1973 में I AS बने थे।

अतुल कुमार बरनवाल

जय अहिबरन

जय बरन तीर्थ

रजि. 35023-2007

डॉ. त्रिवेणी प्रसाद बरनवाल स्मृति सेवा संस्था

C 7/149, सेनपुरा, चेतगंज, वाराणसी

मो. 9415285307, 9811044409

संस्था के मुख्य उद्देश्यः

1. राष्ट्र, समाज एवं बरनवाल समाज के उत्थान, शिक्षा, स्वास्थ्य उन्नयन के लिये कार्य करना।

2. निर्धन मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करना।

3. पीड़ित निराश्रित एवं विधवा महिलाओं की सहायता करना एवं उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में मदद करना।

4. निर्धन, कमजोर और असहाय वर्ग के लिए निशुल्क अथवा कम खर्च पर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाना अथवा चिकित्सा के लिए आर्थिक मदद करना। इसके लिए जगह जगह पर औषधालय की स्थापना करना, नर्सिंग होम की स्थापना करना, एंबुलेंस की व्यवस्था करना, स्वास्थ शिविर आयोजित करना।

5. रोजगार मूलक प्रशिक्षण संस्था की स्थापना करना।

6. आयुर्वेद, राष्ट्रभाषा हिंदी और भारतीय संस्कृति के मूलभूत सिद्धांतों का प्रोत्साहन करना।

7. डॉक्टर साहब की रचनाओं, भाषणों, महत्वपूर्ण संदर्भों का संकलन करना और पुस्तकाकार कर के उनके विचारों का प्रचार प्रसार करना।

8. बरनवाल समाज पर अबतक प्रकाशित इतिहास को संकलित करना एवं बरन शहर (बुलन्दशहर) पर ऐतिहासिक दृष्टि से एक गवेष्णांत्मक शोध ग्रंथ लिखने के लिये अनुदान, पुरस्कार आदि प्रदान कर उन्हें प्रोत्साहित करना।

नोट:-निर्धन एवं मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति के लिए आवेदन पत्र (वहां की स्थानीय समिति द्वारा अनुमोदित व आय एवं अंक प्रमाण-पत्र के साथ) आमंत्रित किए जाते हैं।

श्री गणेशाय नमः   मो0 :- 06324-212102

!! जय महाराजा अहिबरन !!

अहिबरन पैलेस

यहाँ ठहरने की उत्तम व्यवस्था है तथा शादी-विवाह एवं अन्य उत्सवों / पार्टी के लिए जगह उपलब्ध है।

डॉ० प्रद्युम्न कुमार - अध्यक्ष

सुविधाएँ

A/C ROOMS /NON A/C ROOMS

पार्टी हॉल, शादी विवाह के लिए हॉल एवं अन्य सुविधाएँ उपलब्ध ।

श्री कृष्णदेव प्रसाद - सचिव

श्री विनोद कुमार - उपाध्यक्ष
श्री जवाहर लाल -कोषाध्यक्ष
श्री अशो क प्रसाद - अंकेक्षक सह कार्यकारिणी सदस्य
श्री कृष्णा प्रसाद - कार्यकारिणी सदस्य
श्री नवीन कुमार - कार्यकारिणी सदस्य

श्री सविनय कुमार - संयुक्त सचिव
श्री शम्भुदेव लाल बरनवाल अंकेक्षक सह कार्यकारिणी सदस्य
श्री नरेश कुमार बरनवाल - मिडिया प्रभारी सह कार्यकारिणी सदस्य
श्री प्रमेश कुमार बरनवाल - कार्यकारिणी सदस्य
श्री नवीन कुमार, अध्यक्ष, नवयुववक संघ

प्रबंधकः शशि रंजन कुमार मो० नं०-9835104306/7903456061, लैंडलाइन नं० -063243575

काली चौक, ठाकुरवाड़ी रोड, नवादा, बिहार, 805110

डॉ. ए. के. कौशिक
MS (Gen. & Lap. Surgery) IMS-BHU
चेयरमैन- पॉपुलर ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स

Caring for your every breath

पॉपुलर हॉस्पिटल्स

NABH
H-2023-1174

डॉ. किरन कौशिक
MD (OBG) IMS-BHU
मैनेजिंग डायरेक्टर- पॉपुलर ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स

AWARDS & FELICITATIONS

Honorable Chief Minister Shri Yogi Adityanath awarded to **Dr. A.K. Kaushik (Chairman - Popular Group of Hospitals)**

"BEST LAPROSCOPIC SURGEON IN U.P."
by Dr. Harshvardhan Singh
Ex. Health Minister, Delhi Govt.

"IN THE FIELD OF SOCIAL SERVICE"
by Shri Shripad Yesso Naik
Minister of State, Ayush Dept., Govt of India

Getting recognition for the services provided in the field of Health Care Sector at **News Nation.**

Cashless Facilities Available For TPA / Health Insurance, CGHS, ECHS, Railways, PSU & State Govt. Card Holders etc.

मेडिकल इमरजेंसी हेतु समर्पित

पूर्वांचल का एकमात्र हॉस्पिटल

300 बेड का फुल कॉर्पोरेट सुविधाओं के साथ निरंतर अग्रसर

24 hr EMERGENCY SERVICE

सुपरस्पेशियलिटी

- कॉर्डियक सर्जरी
- कार्डियोलॉजी
- न्यूरो सर्जरी
- गैस्ट्रो, पेट लिवर रोग
- नेफ्रोलॉजी
- यूरोलॉजी
- आंकोलॉजी
- बर्न, रिकन्स्ट्रक्टिव एवं प्लास्टिक सर्जरी

स्पेशियलिटी

- पल्मोनोलॉजी
- जनरल मेडिसिन
- न्यूरो मेडिसिन
- लैप्रोस्कोपिक एण्ड लेजर सर्जरी
- ऑर्थो, ट्रॉमा ज्वाइंट रिप्लेसमेंट
- पेन मैनेजमेंट
- गाईनेकोलॉजी एण्ड IVF
- पीडियाटिक्स
- ई.एन.टी. एवं नेत्र

विशेष सुविधाएं

- कैथलैब
- ICU
- CCU
- PICU
- NICU
- MRI
- डायलिसिस
- ब्लड बैंक

- IVUS
- Rotablation
- CRRT
- जर्मन मशीनों द्वारा अत्याधुनिक तकनीक से स्पाइन सर्जरी
- Popular IVF

24x7 Helpline: 7800001896/95 1800-121-141000

पॉपुलर हॉस्पिटल, वाराणसी
बी.एल.डब्ल्यू. रोड, वाराणसी

पॉपुलर हॉस्पिटल, मीरजापुर
जंगी रोड, नटवाँ, मीरजापुर

पॉपुलर हॉस्पिटल, बच्छांव
चुनार रोड, बच्छांव, वाराणसी

सिटी हॉस्पिटल, वाराणसी
सिगरा, वाराणसी

पॉपुलर हॉस्पिटल, गोपीगंज
जी.टी. रोड, पड़ाव